अंकुर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

118-121वाँ संयुक्तांक
अप्रैल 2020 से मार्च 2021

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017

कुर्सियों पर बांए से:
श्री राकेश रंजन मिश्रा (हिन्दी अधिकारी), श्री शीशराम वर्मा (उप महालेखाकार),
श्री होवैदा अब्बास (प्रधान महालेखाकार), सुश्री सीमा गुप्ता (वरिष्ठ लेखा अधिकारी)।

खड़े हुए बांए से:
श्री अंकित कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), सुश्री एकता (वरिष्ठ अनुवादक),
सुश्री कविता शर्मा (कनिष्ठ अनुवादक), श्री मनीष कुमार (कनिष्ठ अनुवादक)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अंकुर

118-121वाँ संयुक्तांक अप्रैल 2020 से मार्च 2021

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	**श्री होवैदा अब्बास** प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017
सरंक्षक	:	**श्री शीशराम वर्मा** उप महालेखाकार (प्रशासन)
मुख्य संपादक	:	**सुश्री सीमा गुप्ता** वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	:	**श्री राकेश रंजन मिश्रा** हिन्दी अधिकारी
संपादन सहयोग	:	**सुश्री एकता** वरिष्ठ अनुवादक **श्री अंकित कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **श्री मनीष कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **सुश्री कविता शर्मा** कनिष्ठ अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	**चण्डीगढ़ में स्थित रॉक गार्डन** (सौजन्य - इंटरनेट)
अंक	:	118 से 121वाँ संयुक्तांक
प्रतियां	:	एक सौ पचास
प्रकाशक	:	**राजभाषा कार्यान्वयन समिति,** कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी.चण्डीगढ़ - 160017
मूल्य	:	**राजभाषा के प्रति निष्ठा।**
मुद्रक	:	**कैपिटल ग्राफिक्स** एस.सी.ओ. 133-135, सैक्टर 17-सी, चण्डीगढ़।

नोटः रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

प्रकाशक विवरण		2
अनुक्रमणिका		3
संदेश		4-8
मुख्य संरक्षक का संदेश		9
संरक्षक का संदेश		10
संपादकीय		11
पाठकों के पत्र		12

आलेख

अज्ञेय-एक अप्रतिम सम्पूर्ण साहित्यकार	माधव कौशिक	14-16
पीढ़ी का अंतर	राजीव कुमार बंसल	17
माँ मेरी प्यारी माँ	रंज्जु महाजन	18-19
पागलखाना	हरबंस कौर ओबराय	20-21
सोशल डिस्टैंसिंग	राहुल वर्मा	22-23
मानवीय दृष्टिकोण	गणेश कुमार मीना	24

कविता

ये दौर	अंकित कुमार	29
दुनियादारी	एकता	30
नारी विमर्श की मैं हुंकार	संतोष धीमान	31
इलतिज़ा-ए-खूबसुरत	सुनील कुमार गुप्ता	32
एक आस है तू	मनीष कुमार	33
पिता	आशीष देवगण	34
पेंशन स्कंध	चन्दन	35
मेरी माँ	गणेश मीना	36

कहानी

जब कोई फौजण होती है	मंजीत कौर मीत	38-39
जानवर कौन?	अम्बरीश शुक्ला	40

कार्यालयीन समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियाँ		41-42
नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ एवं सेवा निवृत्तियां		43-46

सत्यमेव जयते

पूनम पाण्डेय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'अंकुर' के नवीन अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस संबंध में मेरी ओर से ढेरों शुभकामनाएं। कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्र-पत्रिकाएं सभी कार्यालयों के बीच एक सांस्कृतिक एवं वैचारिक सेतु का कार्य करती हैं। इसके साथ ही कार्यालय में रचनात्मक वातावरण तैयार करने तथा कार्मिकों में राजभाषा के प्रति निष्ठा जगाने में विभागीय पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'अंकुर' पत्रिका का यह अंक भी कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगा। पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

पूनम पाण्डेय

सत्यमेव जयते

विशाल बंसल
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 118-121वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि पूर्व के अंकों की भांति यह अंक कार्मिकों की रचनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करेगा। राजभाषा हिंदी हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों को आपस में जोड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी है। कार्यालयी पत्रिकाएं, कार्यालय के विभिन्न गतिविधियों तथा कार्यकलापों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रोत्साहित करती हैं। इस दिशा में 'अंकुर' का यह अंक अवश्य सहायक सिद्ध होगा।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं एवं इसके रचनाकारों तथा संपादक मंडल को बधाई।

विशाल बंसल

विशाल बंसल

सत्यमेव जयते

सुशील कुमार ठाकुर
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय),
चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 118-121वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इसके लिए पत्रिका परिवार के सभी सदस्य एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। यह पत्रिका हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार के साथ ही हिंदी को समृद्ध बनाने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। मानव मन सृजनशीलता, बुद्धलब्धि एवं अभिव्यक्ति के लिए जाना जाता है। भाषा सृजनशीलता और अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, साथ में मानव समाज को जोड़ती है।

हिंदी भारत की संपर्क भाषा के रूप में स्थापित है और राजभाषा के रूप में गौरवान्वित है। राजभाषा के प्रति सम्मान और समर्पण भारतीयता की पहचान है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल रहेगी एवं हिंदी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग देगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

सुशील

सुशील कुमार ठाकुर

सत्यमेव जयते

विनीता मिश्रा
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चंडीगढ़

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी, चंडीगढ़ की हिन्दी पत्रिका अंकुर के 118-121 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। हिंदी पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में बहुमूल्य योगदान देती हैं तथा विभिन्न कार्यालय में होने वाली सांस्कृतिक व अन्य गतिविधियों से अवगत कराती हैं।

हिंदी न केवल आम आदमी की भाषा है बल्कि विज्ञान, उद्योग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ रही है। आज हर क्षेत्र में एक भाषा के रूप में हिंदी की आवश्यकता महसूस की जा रही है। राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा नैतिक कर्तव्य ही नहीं बल्कि संवैधानिक दायित्व भी है। हमें सरल, सहज व सुगम हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए ताकि जनमानस तक आसानी से बात पहुंच सके।

पत्रिका के संपादक एवं प्रबन्धक मण्डल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

विनीता मिश्रा

सत्यमेव जयते

वी. एस. वेंकटनाथन
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
रक्षा सेवाएं, चंडीगढ़

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 118-121 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिंदी पत्रिकाओं की राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कार्यालयी हिंदी पत्रिकाएं एक दूसरे कार्यालय की गतिविधियों को जानने का अवसर प्रदान करती हैं। कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों में सृजनात्मकता की जागृति हेतु आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' का अहम योगदान है। पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारी / कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं।

आशा है कि पत्रिका का यह संयुक्त अंक भी गत अंकों की भांति पाठकों के ज्ञानवर्धन तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

वी. एस. वेंकटनाथन

सत्यमेव जयते

होवैदा अब्बास
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़

मुख्य संरक्षक का संदेश

मुझे अंकुर पत्रिका का 118-121 वां अंक आपको सौंपते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है। कर्मचारियों में रचनात्मक प्रतिभा को उभारना और कार्यालयीन गतिविधियों को सभी अन्य कार्यालयों तक पहुंचाने में विभागीय पत्रिकाओं का बहुत ही योगदान रहा है। विभागीय पत्रिका के माध्यम से सभी कर्मचारी भाग-दौड़ भरे जीवन से कुछ क्षण रचनात्मकता को भी दे पाते हैं। अंकुर पत्रिका सदैव इस उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल रही है। हिंदी भारत संघ की राजभाषा है इसलिए राजभाषा अधिनियम तथा नियम के उपबंधों को ध्यान में रखते हुए अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए।

अंकुर पत्रिका के इस अंक में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका को रोचक बनाने का प्रयास किया है। आशा है पत्रिका का यह अंक राजकाज के कार्यों में हिंदी को प्रसारित करने के लिए प्रेरित करेगा।

अंत में मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों और रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूं।

होवैदा अब्बास

सत्यमेव जयते

शीशराम वर्मा
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)
पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ

संरक्षक का संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि 'अंकुर' पत्रिका का 118-121 वां अंक प्रकाशित हो रहा है। कार्यालय की पत्रिका वहां के कार्मिकों के भावों और विचारों का दर्पण होती है। इसके साथ-साथ ये राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कामकाज करने की मनोभावना को भी उजागर करती है।

पत्रिका का संपादन रचनाकारों के योगदान के बिना संभव नहीं हो सकता अत: सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल और सभी रचनाकारों को धन्यवाद देता हूं। मैं आशान्वित हूं कि 'अंकुर' पत्रिका प्रत्येक वर्ष ऐसे ही सफल रूप से प्रकाशित होती रहेगी।

शीशराम

शीशराम वर्मा

सत्यमेव जयते

संपादकीय

विभागीय पत्रिका 'अंकुर' का 118-121 वां अंक आपको प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी में रचनात्मक विकास के साथ-साथ कार्यालय में हिंदी उपयोग की संभावना में बढोतरी होगी। हिंदी भाषा न केवल भारतवर्ष की राजभाषा है अपितु यह भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक धरोहर का स्वरूप भी है। आज भले ही अंग्रेजी भाषा समाज में एक ऊंचे सामाजिक स्तर से जुड़े होने का दंभ पैदा करती है परन्तु हिंदी भाषा हमारे शालीन और सभ्य स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती है। हिंदी भाषा को जन-मन की भाषा बनाने में समाचार पत्रों पत्रिकाओं, सिनेमा और अन्य मीडिया माध्यमों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी संदर्भ में यदि हम नये मीडिया मध्यमों की बात करें तो इनमें लैपटाप, फोन, टैब आदि पर हिंदी भाषा से संबंधित नई एप्लीकेशन, शब्दकोश तथा हिंदी फोंट उपलब्ध हैं। गूगल वॉईस टाईप तो हिंदी भाषा में टंकण न जानने वाले लोगों के लिए वरदान है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय में हिंदी सीखने, बोलने तथा प्रयोग की राह काफी सुलभ हो गई है।

अंत में मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक आभारी हूं जिनके सतत् सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। भविष्य में भी ऐसे ही सहयोग की आशा है।

राकेश रंजन मिश्रा
हिंदी अधिकारी

पाठकों के पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मणिपुर
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
MANIPUR, IMPHAL - 795 001

हिंदी कक्ष/ले.प.[illegible]/2021-22/ 06 दिनांक- 11/10/2021

सेवा में,

हिंदी अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017

विषय- प्रशंसा पत्र।

महोदय,

आपके कार्यालय की [illegible] हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 114-117 वें संयुक्तांक की 2 (दो) प्रतियां इस कार्यालय को [illegible] हुई है। पत्रिका में [illegible] रचनाएं [illegible], पठनीय एवं प्रशंसनीय है। [illegible] 'कहानी' [illegible] 'बेबसी' [illegible] हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक [illegible] प्रयास है। सभी लेख पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के [illegible] के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद

भवदीय

हिंदी अधिकारी

महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा) - II महाराष्ट्र-मुंबई शाखा कार्यालय
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) - II MAHARASHTRA BRANCH OFFICE MUMBAI
दूरभाष सं./Tel. No. : 022-22054022 / 022-22057390, फैक्स न./ Fax No.: 022-22092326
ई-मेल/E-mail: agcommaudMaharashtra@cag.gov.in

[illegible]/हिन्दी पत्रिका/2021/576 / 561 29 SEP 2021

सेवा में,
पर्यवेक्षक (हिन्दी)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब व यू.टी. चंडीगढ़ का कार्यालय,
चंडीगढ़ -160017

विषय: हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 114-117वें संयुक्तांक की प्राप्ति के संबंध में

महोदय,

आपके कार्यालय से हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 114-117वें संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई है। [illegible] से सुसज्जित पत्रिका का [illegible] सुंदर है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ [illegible] तनाव के कारण तथा जल संरक्षण: समस्या एवं समाधान [illegible] शुरुआत नए कल की, बेबसी तथा इंसान और इंसानियत कविताएं एवं पुटन बिजुका तथा अभिमानित कहानियाँ अत्यंत प्रशंसनीय हैं। कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे हिन्दी [illegible] समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह तथा [illegible] समारोह की झलकियाँ अति शोभनीय हैं। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

भवदीया,

(गेरी [illegible])
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

प्रतिष्ठा भवन, [illegible], मुंबई-400 020 PRATISHTHA BHAVAN, [illegible] FLOOR, 101, M.K. ROAD, MUMBAI - 400 020

दूरभाष : 0172-2544499
tolic.chandigarh@gmail.com

भारत सरकार/GOVT. OF INDIA
आयकर विभाग/INCOME TAX DEPARMENT
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं
प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, उ.प. क्षेत्र, आयकर भवन, चण्डीगढ़-160017
O/o The Chairman TOLIC & Pr. Chief Commissioner of Income Tax (NWR), Aayakar Bhawan, Sector-17E, Chd.

फा.सं. राजभाषा/28/नराकास च. प्रशा/2021-22/ 5071 दिनांक:27.09.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिंदी),
कार्यालय प्र.महालेखाकार(लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू. टी., चंडीगढ़-160017

विषय: हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' का 114-117 संयुक्तांक -

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका 'अंकुर' के 114-117 के संयुक्तांक की प्राप्ति हुई, पत्रिका भेजने के लिए धन्यवाद।

पत्रिका का कलेवर एवं आंतरिक साज सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में समाहित प्रत्येक लेख पठनीय एवं आज के समाज से जुड़ा हुआ है। 'जल संरक्षण-समाज एवं समाधान','अपने हाथ,जगन्नाथ','तनाव के कारण','चीटिंग' रचनाएं वर्तमान के विषयों पर आधारित हैं और उनकी समस्याओं को उजागर करती हैं। 'हां,हिंदी मां,मेरी है', हिंदी भाषा पर सुंदर रचना है जो हिंदी को पूर्ण रूप से अपनाने और उस पर गर्व करने की सीख देती है।

पत्रिका में कहानियाँ- 'अभिमानित', 'घुटन', 'बिजुका', कविताओं-'इंसान और इंसानियत', 'शुरुआत नए कल की', 'बेबसी' गजल एवं चुटकुलों को भी शामिल किया गया है जिससे पत्रिका और भी मनोरंजक व रोचक बन गयी है। विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों के समावेश से पत्रिका की शोभा में वृद्धि हुई है।

पत्रिका के नियमित और सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीया

(नीना मल्होत्रा)
उप निदेशक (रा.भा.) एवं
सचिव नराकास, चण्डीगढ़।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम उ.प्र., प्रयागराज
Office of the Accountant General (Accounts & Entitlement)-I, U.P., Prayagraj

प.सं. हि.अ./पत्रिका/53842 दिनांक: 08.10.2021

सेवा में,
पर्यवेक्षक/हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़ - 160017

विषय:- हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 114-117वें संयुक्तांक की प्राप्ति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "अंकुर" के 114-117वें संयुक्तांक की दो प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर [illegible] एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबन्धित छायाचित्र काफी अच्छे लगे। संकलित समस्त रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्रीमती हरजीत कौर ओबराय का लेख "चीटिंग", श्री विनय कुमार शर्मा की कविता "शुरुआत नए कल की", श्री सुनील कुमार गुप्ता की कविता "बेबसी", श्री संतोष धीमान की कहानी "अभिमानित", सुश्री एकता की कहानी "घुटन" एवं श्री [illegible] शर्मा की कहानी "बिजूका" अति रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को [illegible] के अभियान को सफलतापूर्वक संपादित कर रही है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर [illegible] रहे, इसी शुभकामना के साथ आपकी पत्रिका "अंकुर" के उज्जवल भविष्य हेतु "[illegible]" पत्रिका की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी

20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001 [illegible]
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj - 211001 Phone : [illegible]

आलेख

अज्ञेय-एक अप्रतिम सम्पूर्ण साहित्यकार

-माधव कौशिक

''हिन्दी साहित्य–जगत के दुर्भावनापूर्ण रवैये तथा संकीर्ण मानसिकता के बहुत से दुष्परिणाम हमारे समक्ष हैं। सबसे बड़ा दुष्परिणाम तो यह हुआ है कि हम नई पीढ़ी के सामने कुछ बड़े साहित्यकारों की खंडित तथा धूमिल छवि प्रस्तुत करते रहे। जिन साहित्यकारों ने स्वतंत्रता तथा स्वायत्त चिन्तन के सहारे अपनी रचनात्मकता को आगे बढ़ाया जो संकुचित विचारधाराओं के चंगुल में नहीं आये जिन्होंने साहित्य को राजनीति से अलग रखने का प्रयास किया, वे रचनाकार सर्वाधिक गलत–बयानी तथा गलत मूल्यांकन का शिकार हुए।

मैं स्वयं इस प्रकार की परिस्थितियों का मूक दर्शक रहा हूँ। अपनी युवावस्था के दिनों में मेरी पीढ़ी के लगभग सभी रचनाकारों को यह सुनने को मिलता था कि अज्ञेय पाश्चात्य जीवन शैली एवं साहित्य को भारतीय परिवेश पर आरोपित करते हैं। उनका जन सामान्य से दूर का रिश्ता भी नहीं है। ऐसे घोर कलावादी तथा अहम्निष्ठ लेखक को पढ़ना तो गुनाह है। अति उत्साही गैर जिम्मेदार आलोचक तो उन्हें 'नकलची' तक कहने का दुस्साहस कर बैठते थे।

ऐसी परिस्थितियों में कोई भी नवयुवक भ्रम का शिकार हो सकता है। लेकिन इस सारे भ्रामक प्रचार के बावजूद जिसने भी अज्ञेय के साहित्य को पढ़ा, थोड़ा सा समझने की कोशिश की, उसे समझ आ गया कि अज्ञेय जैसी प्रतिभा का रचनाकार सदियों में ही पैदा होता है। हिन्दी साहित्य जगत की विभूतियों का तटस्थ मूल्यांकन करने वाले जानते हैं कि हमारे यहां कोई कवि है, कोई कथाकार, कोई नाटककार तो कोई निबन्ध लेखक। कहने का तात्पर्य यह है कि हिन्दी में साहित्य की सभी विधाओं में अपनी सृजनात्मक शक्ति का प्रमाण देने वाले इतने कम साहित्यकार हैं कि उनकी गिनती आप उंगलियों पर कर सकते हैं। उन थोड़े से विरले महानुभावों में सम्भवतः अज्ञेय सर्वोपरि हैं जिनके लिये आप अन्तिम राय नहीं बना सकते कि वे महान कवि थे या विलक्षण गद्यकार। ऐसे सम्पूर्ण रचनाकार का सम्यक मूल्यांकन खंडित दृष्टि तथा संकीर्ण राजनैतिक मानकों के आधार पर तो हो ही नहीं सकता था।

किन्तु अब समय ने यह सिद्ध कर दिया है कि अज्ञेय की साहित्य साधना बहुआयामी, बहुकोणिय तथा विविध होने के साथ–साथ बौद्धिक प्रखरता में भी अद्वितीय थी। वे अकेले ऐसे रचनाकार हैं जिन्होंने कविता कहानी, उपन्यास आलोचना, चिंतन, नाटक, निबंध डायरी, यात्रा, अनुवाद संपादन इत्यादि के लगभग सौ ग्रंथों की रचना की।

अपने यौवन–काल में स्वतंत्रता सेनानी रहे अज्ञेय का लेखन कारागार में उत्पन्न हुआ। यह उपनाम भी जैनेन्द्र तथा प्रेमचन्द्र का दिया हुआ था जिन्होंने उसे प्रथम बार 'हँस' पत्रिका में प्रकाशित किया। धीरे–धीरे साहित्याकाश पर अपनी चमक से अभिभूत करने वाले इस रचनाकार ने कवि के रूप में तो अमिट छाप छोड़ी। छायावाद, उत्तरछायावाद तथा प्रगतिवाद के पश्चात् हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद की परिकल्पना तथा उसे साकार रूप देने में अज्ञेय के योगदान को कौन नहीं जानता। तार–सप्तक (1943), दूसरा तार सप्तक (1951) तीसरा तार सप्तक (1959) तथा चौथा सप्तक (1978) के माध्यम से वे जिन कवियों को हमारे सामने लाये, वे सभी हिन्दी काव्य–जगत की अनमोल धरोहर सिद्ध हुए। 'राहों के अन्वेषी' इस कवि ने अपनी काव्य–यात्रा 'भग्नदूत (1933)' से प्रारम्भ की तथा बीस मौलिक तथा महत्त्वपूर्ण काव्य संग्रहों की रचना की। चिंता, इत्यलम, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्रधनु रोंदे हुए थे, अरी ओ करुणा प्रभामय, पुष्करिणी, आंगन के पार द्वार पूर्वा, सुनहले शैवाल, कितनी नावों में कितनी बार, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ, सागर मुद्रा, पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ, महावृक्ष के नीचे, नदी की बाँक पर छाया, सदानीरा, ऐसा कोई घर आपने देखा है, तथा मरुस्थल अज्ञेय के वे कविता संग्रह हैं जिनमें हमारा समाज, हमारा समय तथा हमारी संवेदना साँस लेती है। अति चर्चित तथा प्रशंसित इन काव्य संग्रहों की भाषा–शैली तथा कविता के नये उपमान हिन्दी को नये

संस्कारों से अनुप्राणित करते हैं। वे स्वयं लिखते हैं "आधुनिक जीवन की जटिलताओं ने कवि–कर्म को कठिन अवश्य कर दिया है लेकिन कवि इस समस्या के सामने हारा नहीं है।"

वह भाषा की क्रमशः संकुचित होती हुई सार्थकता की केंचुल फाड़कर उसमें नया, अधिक व्यापक, अधिक सारगर्भित अर्थ भरना चाहता है। और अंहकार के कारण नहीं है इसलिये कि इसके भीतर इसकी गहरी माँग संपादित है। इसलिये वह व्यक्ति–सत्य को व्यापक–सत्य बनाने का सनातन उत्तरदायित्व अब भी निभाना चाहता है, पर देखता है कि साधारणीकरण की पुरानी प्रणालियाँ जीवन के ज्वालामुखी से बहकर आते हुए लावा से भी भरकर और जमकर अवरूद्ध हो गई हैं, प्राण संचार का मार्ग उनमें नहीं है। (आत्मपरक : प्रयोग और प्रेषणीयता)

एक तरह से अज्ञेय ने काव्य–संवेदना के अवरूद्ध मार्गों को खोलने का पूरा प्रयास किया। कविता में प्रतीकों का प्रयोग उनकी दृष्टि में प्रतीकवाद नहीं था। न बिम्बों को वे बिम्बावाद मानते थे। जब नये प्रतीकों का प्रचलन और प्रयोग बन्द होने लगता है। इन नये प्रतीकों, उपमानों तथा बिम्बों के बल पर ही अज्ञेय ने एक विलक्षण शब्द संयम तथा शब्द–अनुशासन उत्पन्न किया जिसका पहले कोई उदाहरण सामने नहीं था। इसी शब्द संयम के कारण शमशेर के सबसे मनपसंद कवि अज्ञेय ही रहे।

अपनी कविताओं में अज्ञेय ने भारतीय चिन्तन, परिवेश तथा जातीय–स्मृतियों को संश्लिष्ट रूप से प्रस्तुत ही नहीं किया अपितु उसे जीवन की सम्पूर्णता में परिवर्तित कर दिखाया। उनका प्रकृति प्रेम तथा चित्रण जितना जीवन्त था उससे अधिक रागात्मक। उन्होंने पुराने संदर्भों को नया अर्थ प्रदान कर पशु–पक्षी, फूल–पत्ते, प्रकाश–छाया, रंग–रूप, गंध–ध्वनि इत्यादि को नये कलेवर तथा तेवर के साथ प्रस्तुत किया। अज्ञेय को प्रायः ''मौन कवि'' भी कहा जाता है। वास्तव में मौन जब मुखर होता है तो वह कोलाहल को भी बहुत पीछे छोड़ देता है। एकान्त–साधना से ही भारतीय आध्यात्म को काव्य में परिवर्तित कर 'असाध्य वीणा' से दुर्लभ स्वर निकाले जा सकते हैं। उनकी कविताओं पर जितने भी आक्षेप तथा आरोप लगाये गये, समय ने सभी को खारिज कर दिया। यहाँ तक कि कल तक उनके घोर–विरोधी रहे आलोचक–वृन्द, आज अज्ञेय को नये सिरे से व्याख्यायित कर वाह–वाही लूटने में लगे हैं। अपने समय से कहीं आगे की सोच और संवेदना रखने वाले तत्व–दर्शी, विचारवान साहित्यकार कुछ समय के पश्चात ही समझ आते हैं। ऐसा अज्ञेय के साथ होना कोई नई बात नहीं है।

एक गद्यकार के रूप में अज्ञेय का अवदान इसी तथ्य से समझा जा सकता है कि उनके तीन उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी (भाग 1 व 2) 'नदी के द्वीप' तथा 'अपने–अपने अजनबी' आज भी भारतीय साहित्य की उपलब्धि माने जाते हैं तथा इन तीनों उपन्यासों का सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। अलबत्ता शेखर एक जीवनी को तो आधुनिक क्लासिक का दर्जा दिया जा चुका है। 'आत्मनेपद' में अज्ञेय ने लिखा है जैसे क्रिस्ताफ में लेखक एक आत्मान्वेषी का चित्र खींचता चला है, वैसे ही मैं एक–दुसरे आत्मान्वेषी के पीछे चला हूँ। मुझे इसमें बड़ी दिलचस्पी रही है कि आतंकवादी का मन कैसे बनता है। शेखर की रचना इसी से आरंभ हुई। शेखर अंततोगत्वा 'स्वतंत्रता' की खोज है। इस उपन्यास में पुरातन मान्यताओं को खारिज करते हुए अज्ञेय ने मानव की तीन नैसर्गिक तथा जन्मजात प्रवृत्तियाँ–अहं, भय तथा यौन–भाव के सूक्ष्म संसार को उजागर किया है। अज्ञेय की सृजनात्मक एवं मौलिक दृष्टि–सम्पन्नता से लबरेज यह उपन्यास मानवीय संघर्ष, संयम तथा तनाव का प्रमाणिक दस्तावेज है।

इसी प्रकार 'नदी के द्वीप' तथा 'अपने अपने अजनबी' उपन्यासों की आधारभूमि भी मानवीय संवेगों के साथ सामाजिक सम्बन्धों की जटिलता के सूक्ष्म रोये–रेशों पर आधरित हैं। 'नदी के द्वीप' उपन्यास की प्रेम–कथा मानव–मनोविज्ञान के अनखुले पन्नों का दिग्दर्शन कराती है। भावुकता, बौद्धिकता तथा दैहिक आकर्षण की गहन अनुभूति कितनी कलात्मक तथा बेजोड़ हो सकती है। यह उपन्यास उसका उदाहरण है। लघु कलेवर का होते हुए भी 'अपने–अपने अजनबी' उपन्यास अस्तित्ववाद का साहित्यिक रूपान्तरण नजर आता है। जीवन में नैतिकता के प्रश्न

को दार्शनिक धरातल पर विवेचित करते हुए रचनाकार के सामने मानव–जीवन की सम्पूर्णता अधिक महत्वपूर्ण रही है।

अज्ञेय ने अपने लेखकीय सफर की शुरुआत युवावस्था में जेल से की थी। वहीं से उन्होंने अपनी कहानियाँ जैनेन्द्र के माध्यम से प्रेमचन्द तक पहुँचाई और इसी दौरान प्रेमचन्द ने उनका प्रकाशन 'अज्ञेय के नाम से किया। उनका कहानीकार का रूप तथा स्वरूप इतना प्रभावशाली था कि उस समय के सभी दिग्गज कथाकार लोहा मानने लगे थे। उनके कथा संग्रह विपथगा, परम्परा, अमर वल्लरी, बेड़िया, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल तथा 'ये तेरे प्रतिरुप' प्रमुख हैं। उनकी कहानियों में मानव–मनोविज्ञान की सूक्ष्म विवेचना के साथ सामाजिक विसंगतियों तथा विद्रुपताओं का भी अद्भूत चित्रण हुआ है। कथानक की बुनावट तथा कथ्य की कसावट के चलते, ये कहानियाँ आज भी हिन्दी साहित्य की विशिष्ट धरोहर समझी जाती हैं।

एक कवि उपन्यासकार, कहानीकार के रूप में तो अज्ञेय का अवदान अद्वितीय है ही लेकिन उनके सृजन के दूसरे पक्ष भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। उनकी चार डायरियाँ जिन्हें चिन्तन के महाकोश की संज्ञा दी जा सकती है, बहुत ही विचारोत्तेजक पुस्तक है। भंवती, अंतरा, शाश्वती और शेषा के माध्यम से उन्होंने अपने अन्दर के चिन्तक तथा दार्शनिक को प्रकट किया है। साहित्य को समझने तथा जीवन के व्यापक संदर्भों में उसे देखने की दिव्य दृष्टि अज्ञेय को महा मानव का स्वरूप प्रदान करती है।

उनके यात्रा वृत्तांतों, संस्मरणों तथा साक्षात्कारों व ललित निबन्धों का बड़ा विपुल भंडार सभी को आश्चर्य चकित कर देता है। अरे यायावर रहेगा याद, एक बूंद सहसा उछली, भागवत भूमि यात्रा, जन जनक जानकी यात्रा पूरे देश की सांस्कृतिक गरिमा व महिमा को समझने के सूत्र उपलब्ध करवाते हैं। इसी प्रकार उन्होंने हिन्दी निबन्ध को भी नई दिशा दी। 'कटि चातन' नाम से व्यक्ति व्यंजक या ललित निबंध लिखे हैं लेकिन उनकी चर्चा कम हुई। अज्ञेय के वैचारिक, आलोचनात्मक काव्य शास्त्रीय और भाषा चिंतन से जुड़े निबंध हमेशा से केन्द्र में रहे हैं। त्रिशंकु, आत्मनेपद, हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य, आलवाल, लिखित कागद कोरे, अद्यतन, संवतसर, स्त्रोत और सेतु, युग संधियों पर, धार और किनारे, स्मृतिच्छंदा उनके प्रमुख निबंध संग्रह हैं। जीवन भर वे स्वाधीन तथा 'स्वायत' जीवन का अन्वेषण करते रहे।

इनके अतिरिक्त उन्होंने पूरा जीवन साहित्य और पत्रकारिता को समर्पित कर दिया। 'सप्तकों' का संपादन तो साहित्यिक क्रांति का पर्याय माना जाता है। 'प्रतीक', 'नया प्रतीक', 'वाक् की अन्तदृष्टि' साहित्यिक पत्रकारिता का मील का पत्थर है। 'दिनमान' का संपादन हिन्दी पत्रकारिता में नये युग का प्रारम्भ माना जाता है। अन्त में मैं अपने अग्रज साहित्यकार बंधु तथा वरिष्ठ कवि–नाटककार नन्द किशोर आचार्य से पूर्णतया सहमत हूँ जिनका मानना है लगभग छह दशकों के इस काल खंड को 'अज्ञेय–युग' की संज्ञा दी जानी चाहिए।

''हिन्दी भाषा हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है''

– सुमित्रा नन्दन 'पंत'

पीढ़ी का अन्तर

–राजीव कुमार बसंल

पीढ़ी का अन्तर सदियों से चला आ रहा है। हम इसके बारे में बचपन से सुनते आये हैं पर कभी समझ नहीं पाये। जिन्दगी की सबसे बड़ी विडम्बना ही यही है कि जब तक जिन्दगी समझ में आती है जब तक जिन्दगी समाप्त होने वाली होती है। पीढ़ी का अन्तर यानि सोच का अन्तर, जरूरतों का अन्तर, साधनों का अन्तर एवं वरीयता का अन्तर।

बच्चों को माँ–बाप की बात तब समझ आती है जब वो खुद माँ–बाप बन जाते हैं और वही स्थिति उनके सामने बच्चों को लेकर उत्पन्न होती है। सुनते हैं कि जब बच्चा 20–30 साल का होता है तब वह खुद को बहुत समझदार समझने लगता है और उसको माँ–बाप की हर बात बेमानी लगती है। 30–40 साल की उम्र में वो माँ–बाप को थोड़ा समझना शुरू करता है। 40–50 साल की उम्र तक आते–आते ही वो माँ–बाप को समझ पाता है। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी होती है।

आज के दौर में पीढ़ी के अन्तर की सबसे बड़ी वजह तेजी से जीवन शैली का बदलना भी है। इसी वजह से बच्चों और बुजुर्गों में तालमेल बिठाने में दिक्कत होती है। पाश्चात्य संस्कृति ने हमारी नई पीढ़ी को बहुत आकर्षित किया है पर हमारी संस्कृति की जड़े भी हमारे अन्दर इतनी गहरी हैं कि न ही हम पाश्चात्य संस्कृति को पूरी तरह से अपना पाये हैं और न ही हम भारतीय संस्कृति को छोड़ पाये हैं।

आज कल के बच्चों के पास समय की कमी है, उनकी काम की व्यस्तता इतनी होती है कि उनको अपने लिए या अपने बच्चों के लिए ही समय नहीं होता तो अपने माँ–बाप को कितना समय दे पाएंगे। तनाव का स्तर एवं प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ गयी है। जिसे कम करने की जरूरत है नहीं तो अपने आप से भी दूर होते जाएंगे। मानव प्रकृति की सबसे बड़ी समस्या यह भी है कि हम एक–दूसरे को समझ ही नहीं पाते या यूं कहें कि समझना नहीं चाहते।

यह पीढ़ी का अन्तर शायद समाप्त तो नहीं हो सकता लेकिन कम जरूर हो सकता है। जरूरत है तो एक दूसरे को समझने की। माँ–बाप बच्चों पर कम से कम निर्भर रहें तो जिन्दगी आसान रहती है। बच्चे भी अपने माँ–बाप को थोड़ा समय और मान सम्मान दें तो जिन्दगी और खुशहाल हो जाए। दोनों एक दूसरे को समझ लें बस यही समझना जरूरी है।

''देश के सबसे बड़े भू-भाग में बोली जाने वाली हिन्दी राष्ट्र भाषा पद की अधिकारिणी है''

– सुभाष चन्द्र 'बोस'

माँ मेरी प्यारी माँ

-रंज्जु महाजन

God cannot be every where but He has made mothers for us. यानि माँ का रूप ही भगवान का दूसरा रूप है। माँ भगवान की बनाई हुई अनुपम कृति है। माँ संसार में जन्म देने के साथ–साथ लालन–पालन, अभिभावक, शिक्षक और ना जाने कितनी ही अहम भूमिकायें निभाती है।

माँ वह है जो हमें जन्म देती है और यही कारण है कि संसार में हर जीवनदायिनी और सम्माननीय चीजों को माँ की संज्ञा दी गई है। जैसे कि भारत माँ, धरती माँ, पृथ्वी माँ और गौ माँ। इसके साथ ही माँ को प्रेम और त्याग की प्रतिमूर्ति भी माना गया है। माँ एक ऐसा शब्द है जिसके महत्व के विषय में जितनी भी बात कही और लिखी जाये उतनी ही कम है। हम माँ के बिना अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। माँ की महानता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इन्सान दुःख में भगवान का नाम लेना भले ही भूल जाये लेकिन माँ का नाम लेना नहीं भूल सकता। माँ को प्रेम वात्सल्य व करूणा का प्रतीक माना गया है।

इतिहास कई सारी ऐसी घटनाओं के वर्णन से भरा हुआ है जिसमें माताओं ने अपनी संतानों के लिए विभिन्न प्रकार के दुःख सहते हुए भी अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया इसीलिए संसार में इसे महत्वपूर्ण रिश्तों में से एक माना गया है।

माँ वह है जो हमें जन्म देती है इसीलिए संसार में हर जीवनदायिनी वस्तु को माँ की संज्ञा दी गई है। हमारे जीवन के शुरुआती समय में यदि कोई हमारे सुख–दुःख का साथी होता है तो वह हमारी माँ ही होती है। माँ हमें कभी इस बात का एहसास नहीं होने देती कि हम अकेले हैं। इसीलिये माँ के महत्त्व को कभी भी नकारा नहीं जा सकता है। माँ अपने बच्चे से कभी नाराज नहीं होती और न ही हो सकती है क्योंकि वह हमें संसार वालों से नौ महीने अधिक जानती है। उसकी अंतरात्मा का तार माँ के सिवाये कोई दूसरा नहीं जान सकता। माँ बच्चों की सुख–सुविधाओं को लेकर हमेशा चिन्तित रहती है। खुद भूखी रहकर अपने बच्चों को खाना खिलाना कभी नहीं भूलती। वह बिना बताये ही बच्चों की परेशानियों के बारे में जान जाती है। अपनी संतान की रक्षा के लिये वह बड़ी से बड़ी विपत्तियों का सामना करने का साहस रखती है। एक माँ स्वयं चाहे कितनी भी कठिनाईयां क्यों ना सह ले मगर अपने बच्चों पर किसी भी प्रकार की आंच नहीं आने देती। जब भी मैं किसी समस्या में होती हूँ तो वह मुझमें विश्वास पैदा करने का कार्य करती है। इन्हीं कारणों से माँ को पृथ्वी पर ईश्वर का रूप माना गया है और यह कहावत भी काफी प्रचलित है कि 'ईश्वर हर जगह मौजूद नहीं रह सकता इसलिए उसने माँ को बनाया है।'

एक स्त्री अपने जीवन में माँ, बहन, बेटी और पत्नी ना जाने कितने रिश्ते निभाती है लेकिन इन सभी रिश्तों में से जिस रिश्ते को सबसे ज्यादा सम्मान प्राप्त है वह माँ का ही रिश्ता है। मातृत्व वह बंधन है जिसकी व्याख्या शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकती।

माँ हमारा पालन–पोषण करने के साथ ही हमारे जीवन में मित्र, मार्गदर्शक, शिक्षक, प्रेरणा–स्त्रोत और कई सारी महत्त्वपूर्ण भूमिकायें निभाती है। मेरे जीवन में अगर किसी ने मुझ पर सबसे ज्यादा प्रभाव डाला है तो वो मेरी माँ ही है।

कई लोगों के जीवन में पौराणिक या ऐतिहासिक सफल व्यक्तित्व उनका प्रेरणास्त्रोत हो सकता है लेकिन मेरे जीवन में तो मैं अपनी माँ को ही अपनी सबसे बड़ी प्रेरणास्त्रोत के रूप में देखती हूँ। मैंने आजतक अपनी माँ को विपत्तियों के आगे घुटने टेकते नहीं देखा, दुःखों की परवाह नहीं की और मेरी सफलताओं के लिए उन्होंने कितने ही कष्ट सहे। उनका सादा जीवन उच्च विचार, रहन–सहन और दृढ़ इच्छाशक्ति मेरे जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा है। वह मेरी प्रेरणास्त्रोत इसलिए भी है क्योंकि ज्यादातर लोग प्रसिद्धि और शोहरत पाने के लिए कार्य करते हैं लेकिन एक माँ कभी भी यह नहीं सोचती है वह तो बस अपने बच्चों को जीवन में सफल बनाना चाहती है। वह जो भी कार्य करती है उसमें उसका अपना कोई भी स्वार्थ निहित नहीं होता। यही कारण है कि मैं अपनी माँ को पृथ्वी पर सबसे अच्छी मित्र और शिक्षक मानती हूँ। एक आदर्श जीवन जीने के लिए माँ की दी गई शिक्षायें जीवन जीने का ढंग सिखाती हैं। मेरी माँ सबसे अच्छी शिक्षक है क्योंकि मुझे जन्म देने के साथ ही उसने मुझे मेरे प्रारंभिक जीवन में वह हर एक चीज सीखाई है जिनके लिए मैं पूरे जीवन उसकी आभारी रहूंगी क्योंकि जब मैं छोटी थी तो मेरी माँ ने मुझे अंगुली पकड़कर चलना सिखाया। जब मैं थोड़ी बड़ी हुई तो मेरी माँ ने मुझे कपड़े पहनना, ब्रश करना, जूते का फीता बांधना सिखाने के साथ ही जिंदगी जीने की कला भी सिखाई।

मेरी माँ ने इतना ही नहीं बल्कि मुझे इस बात की शिक्षा भी दी है कि समाज में किस तरह से व्यवहार करना चाहिये। वह मेरी हर सफलता का आधार स्तम्भ भी है। यही कारण है कि मैं उन्हें अपनी मित्र मानती हूँ।

आज जहां भी कार्यरत हूं, यह सब उस देवी माँ की बदौलत ही हूँ। हम जितने भी अपने जीवन में शिक्षित तथा उपाधिधारक क्यों ना हों जायें लेकिन अपने जीवन में जो चीजें हमने अपनी माँ से सीखी है, वह हमें दूसरा कोई नहीं सीखा सकता। वह मेरे दुःख में मेरे साथ रही है। मेरी तकलीफों में मेरी शक्ति बनी है और मेरी सफलता का आधरस्तंभ भी है। उनके मेहनत, निःस्वार्थ भाव, साहस तथा त्याग ने मुझे सदैव ही प्रेरित किया है। उन्होंने मुझे सामाजिक व्यवहार से लेकर ईमानदारी तथा मेहनत जैसी शिक्षायें प्रदान की हैं। मेरी माँ मेरी सर्वप्रथम शिक्षक है और महत्वपूर्ण गुरू है और गुरू ही रहेंगी। आज भी भले ही मेरी माँ कोई बहुत पढ़ी लिखी नहीं थी लेकिन उसकी जिन्दगी के तजुर्बे से प्राप्त ज्ञान की बातें किसी भी इंजीनियर या प्रोफेसर के तर्कों से कम नहीं है। आज भी वह मुझे कुछ ना कुछ जरूर सिखा पाती है क्योंकि मैं कितनी भी बड़ी क्यों ना हो जाऊँ, लेकिन उनकी जिन्दगी के अनुभव से मैं हमेशा छोटी ही हूँ और छोटी ही रहूंगी।

हमें अपनी माँ को पूर्ण रूप से सम्मान देना चाहिये। वह हमारे लिये जीती जागती देवी माँ का रूप है। उसके ऊपर पूर्ण रूप से अपना सर्वस्व लूटा देना चाहिये।

इसीलिये तो कहते हैं कि ओ माँ ओ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी,

ओ माँ ओ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी।

आज मैं जिस परिवार, समाज और कार्यस्थल में हूं ये सब उसी ममतामयी, वात्सल्यमयी और करूणामयी माँ की बदौलत ही हूँ।

जिस घर में माँ की पूजा होती है वो घर स्वर्गतुल्य हो जाता है।

कहा भी जाता है कि 'यत्र नार्यस्तु पुज्यते, तत्र देवता रमणते'

पागलखाना

-हरबंस कौर ओबराय

मैं राजपुरा के एक स्कूल में पी.टी.आई. के पद पर कार्यरत थी। (शारीरिक शिक्षा खेलों की अध्यापिका) पंजाब के किसी भी स्कूल में कोई प्रतियोगिता या खेल होते तो मेरी ड्यूटी टीम को लेकर जाने और वापिस लाने की होती और मेरे साथ एक अध्यापिका भी होती थी। राजपुरा के जो भी स्कूलों (जोनल) के मैच होते तो हमारी टीम प्रथम आती थी। हमारी टीम बैडमिन्टन, टेबल टैनिस, क्रिकेट आदि हमेशा जीतती थी। हम राजपुरा जोन में मैच जीत कर जहां भी पंजाब में मैच होते जाते थे, कभी जालन्धर, पटियाला, सरहिन्द आदि।

हमारी बैडमिन्टन और टेबल टेनिस की टीम प्रथम आई तो हम खेलने के लिए राज्य स्तर पर अमृतसर गये और हमे वहां गुरूनानक यूनिवर्सिटी में ठहराया गया। मेरे साथ बैडमिन्टन के पाँच खिलाड़ी थे। शाम के समय जब हम मैच से फ्री होते तो मैं बच्चों को घूमाने के लिए कभी गोल्डन टैम्पल (गुरूद्वारा) जलियांवाला बाग, दुर्गायना मन्दिर घूमा कर लाती। हम वहाँ चार दिन रहे, खिलाड़ियों ने खूब मौज–मस्ती की, वहां हमारी तीसरी पोजीशन आई।

अमृतसर में हमारा आखिरी दिन था। खिलाड़ी बोले मैडम जी कल हम वापिस राजपुरा चले जायेंगे। मैंने कहा अपनी तरफ से अमृतसर तुम्हें घूमा दिया है, हाँ बाकी गुरूद्वारे काफी दूर हैं और गुरूद्वारा (Golden Temple) से रोज बस जाती है और शाम को वापिस आती है। एक खिलाड़ी बोला मैडल जी आप हमको अमृतसर का पागलखाना भी दिखा दें एक खिलाड़ी बोला मैडम जी मैंने देखा है बहुत बड़ा है। मैं चुप हो गई, सब खिलाड़ी जोर–जोर से हँसने लगे और कहने लगे तू कब पागल होकर यहां आया था। मैंने खिलाड़ियों को डाँट दिया।

मैंने कहा अच्छा देख लेते हैं एक तांगे वाले से मैंने उसे पागलखाना लेकर जाने को कहा। तांगे वाला बोला बहन जी आप वहां से जल्दी आ जाना और इन बच्चों का ख्याल रखना। हम तांगे वाले को पैसे देकर गेट की तरफ बढ़ गये।

हम सब गेट के पास पहुंचे ही थे कि एक व्यक्ति मोटा सा डन्डा लेकर खड़ा था। व्यक्ति बोला मैं आपको सारा पागलखाना दिखा देता हूँ मेरे साथ चलो, हम उसके पीछे–पीछे चल पड़े। लोगों का अपने रिश्तेदारो (पागलों) से मिलने का समय खत्म हो गया था। बैराक के पीछे खिड़कियों में से हमने देखा कोई रो रहा है, कोई हंस रहा है, कोई चुपचाप बैठा है, कोई आपस में लड़ रहे हैं सभी पागल तरह–तरह की हरकतें कर रहे हैं। एक खिड़की के पास एक व्यक्ति खामोश बैठा देख रहा था। मैं उस खिड़की के पास रूक गई, उसने मुझे नमस्ते की

वह बहुत ही हैंडसम था, साफ–सुथरे कपड़े पहने हुए। उसके पास मेज पर काफी किताबें रखीं थी। व्यक्ति ने मुझे बताया कि मैंने पी.एच.डी. की है। मुझे एक लड़की ने धोखा दिया है यह कहते ही वह जोर–जोर से हांफने लगा मैं डर गई और आगे बढ़ गई (शायद उस समय वह बिल्कुल ठीक था)

हम सारे पागलखाने में घूमे, कहीं बच्चे, कहीं महिलाएं, कहीं आदमी बैरकों में बन्द थे। शाम को अन्धेरा बढ़ने लगा था। इतने में एक व्यक्ति जिसने यूनिफार्म पहन रखी थी, उसके हाथ में एक रजिस्टर और डन्डा था, चाबुक भी उसके पास थी। कहने लगा मैडम आपका पास कहा है, मैंने कहा इसने हमें पास नहीं दिया। इन्चार्ज ने पूरा घूरकर उसे देखा तो व्यक्ति दौड़ गया। वह हमें बोला वाह! एक पागल के साथ पूरा पागलखाना आपने देख लिया।

मैडम जी शायद आपको पता नहीं है यह तो सबसे बड़ा पागल है। पहले यह पागलखाने का इन्चार्ज था। बेचारे लड़के के मरने के बाद पागल हो गया है जब इसको दौरा पड़ता है तो यह मार भी देता है, पाँच व्यक्ति इसे बड़ी मुश्किल से काबू करते हैं। हम सब इतना डर गये और नमस्ते कहकर गेट की तरफ दौड़े। वहां से हमने तांगा लिया और जहां हम ठहरे थे वहां वापस आ गये। हम सब बहुत ही डर गये और अपना–अपना सामान ठीक करने लगे। सुबह हम अमृतसर से बस लेकर राजपुरा आ गये। भगवान लोगों को क्यों पागल बना देता है। हमारा समाज भी उन्हें गलत ही समझता है। जब कभी मुझे पागलखाने की बात याद आती है तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि सब मनुष्यों को ठीक रखे।

''मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असम्भव है''

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

सोशल डिस्टैंसिंग - क्या हमेशा के लिए बन जायेगी सामाजिक दूरी?

-राहुल वर्मा

संपूर्ण विश्व कोरोना (COVID-19) नामक महामारी से जूझ रहा है, मौत का आंकड़ा लाखों के पार जा चुका है। रोज हजारों लोग अपनी जीवन लीला कोरोना त्रासदी के नाम कर रहे हैं। यह भयानक त्रासदी अभी रूकने का नाम नहीं ले रही है। इस महामारी ने पूरे विश्व में एक अजीब सी घनघोर निराशा का वातावरण पैदा कर दिया है। जहां सभी देश तीव्र गति से अपने विकास की दौड़ में भाग ले रहे थे वहीं Covid-19 नाम की महामारी ने इस दौड़ते रथ का पहिया थाम लिया है।

दिनांक 24.03.2020 जब संपूर्ण देश में केन्द्र सरकार द्वारा संपूर्ण लॉकडाउन घोषित कर दिया गया था, कुछ राज्य सरकारें पहले ही लॉकडाउन जारी कर चुकी थी। कोरोना अपनी दस्तक देश में सक्रिय रूप से दे चुका था। समाचार पत्रों, टीवी चैनलों, सोशल मीडिया सभी जगह कोरोना का ही बखान चल रहा था। कोरोना संक्रमण की खबरें, जानकारियां, सावधनियाँ दिशा–निर्देश एवं आंकड़े प्रसारित किये जा रहे थे, एवं एक भयावह स्थिति को और भयानक बना रहे थे। यह सब सामान्य रफ्तार पर चल रही जिन्दगी को नई दिशा की ओर ले जा रहा था। यह किसने सोचा था 'कोरोना अपने साथ अविस्मरणीय यादें, शब्द लेकर आ रहा था, जो जीवन का अहम हिस्सा या कहें कि हमारी मजबूरी बन जायेंगे। उनमें से एक था सोशल डिस्टैंसिंग अर्थात सामाजिक दूरी।

सोशल डिस्टैंसिंग इतना प्रचलन में आ गया कि अनपढ़/गंवार इंसान जिनका कभी अंग्रेजी से सामना भी नहीं हुआ, कोरोना ने भलिभांति अपनी परिभाषा से समझा दिया। यह जो दौर है वो सोशल डिस्टैंसिंग की नई दुनिया के नये वातावरण की ओर नये नियमों के साथ जीने जा रहा है।

बेहद करीबी लोग भी इस नई दुनिया में मौत के डर के कारण दूरी रखने लगे हैं। लोगों की आँखों में तो खौफ दिखाई देने लगा है। आवाज में वो डर वाली झनझनाहट सुनाई देने लगी थी।

सरकार व अफसरशाही लोग कोरोना के संक्रमण को रोकने के लिए लगातार नये निर्देश/आदेश आमजन को जारी कर रहे हैं तथा सोशल डिस्टैंसिंग की पालना करने की सलाह दे रहे हैं। एक समाचार पत्र "The Print" के अनुसार लॉकडाउन में केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा लगभग 4000 से ज्यादा आदेश/निर्देश अथवा घोषणाएं भी जारी की। लालफीताशाही का यह नजारा शायद ही पहले कभी देखने को मिला होगा। सब कुछ पहली बार हो रहा है। दिन–रात दौड़ने वाली रेल का पहिया शायद कई दशकों बाद वापिस रूक गया है। अभी तक भी यह पटरियां रेल की राह देख रही हैं। सामाजिक दूरी बनाने के लिए यह बेहद जरूरी कदम था।

परन्तु कहीं न कहीं सामाजिक दूरी, मानसिक दूरी में तब्दील होती जा रही है। क्या हमारा समाज सामाजिक दूरी से मानसिक दूरी में परिवर्तित हो जायेगा ? क्या ये सामाजिक दूरी हमेशा के लिए बन जायेगी।

जिस प्रकार कोरोना पीड़ितों के साथ व्यवहार हो रहा है, समाज में सामाजिक दूरी की परिभाषा बदलती जा रही है। कोरोना वायरस के बढ़ते संक्रमण और इस महामारी पर सोशल मीडिया व टीवी चैनलों के जरिये अकेलेपन के वातावरण की दिशा में सामाजिक रिश्तों की परिभाषा गढ़ रहे हैं। लंबे समय से सुख–दुःख में भागीदार रहने वाले पड़ौसी भी एक दूसरे को संदेह की निगाहों से देखने लगे। लॉकडाउन के दौरान कई ऐसे मामले समाचार पत्रों के माध्यम से देखे

गये। जहां कोई संक्रमित पिता की मृत्य हो जाने पर बेटों ने मुखाग्नी देने से मना कर दिया यहां तक कि अस्पताल लाने में भी कतरा रहे थे। अस्पताल कर्मियों द्वारा दाह संस्कार किया गया। कुछ मामलों में वापस लौटे तो घरवालों ने अपने ही घर में नहीं घुसने दिया तो अपने ही घर में भेदभाव वाला माहौल बन गया, बच्चों को दादा–दादी, नाना–नानी से दूर कर दिया।

समाज के जानकारों, विशेषज्ञों की नज़र में कोरोना पर देर–सवेर अंकुश लग जायेगा परन्तु इसकी वजह से जो रिश्तों में दूरी बनेगी वो शायद ही पहले वाली स्थिति में लौटे। कोरोना से देश में एक डर का माहौल बन चुका है। शायद कोरोना का प्रभाव खत्म हो जाने पर भी यह बना रहेगा। रिश्तेदारियों, दोस्तों में अपनेपन व त्याग की भावना भी कहीं ना कहीं अपने स्वार्थ के पीछे सिमट कर रह जायेगी।

डाक्टर्स/नर्सेज स्टाफ, पुलिस जिन्होंने लॉकडाउन के भयभीत माहौल में अपनी सेवाएं दी तथा इंसानियत व अपने कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा की बेहद सुंदर तस्वीर समाज के सामने दिखाई। परन्तु ऐसे कोरोना योद्धाओं के घर आने पर पड़ोसियों / आसपास के लोगों की प्रतिक्रियाएं उनका रवैया, संदेह सामाजिक दूरी की विफलता साबित हुई है। हालांकि, कुछ जगहों पर प्रशासन / डाक्टर्स पर अभिवादन की पुष्पवर्षा सच्ची मानवता का परिचय है।

जो भेदभाव जाति–पाति, अमीर–गरीब, छूत–अछूत, पिछले दशकों से चलता आ रहा है सामाजिक दूरी / कोरोना भेदभाव से सभी से कहीं आगे निकल चुका है। अब इंसान हर दूसरे इंसान से भेदभाव कर रहा है। इस मुकाम पर जाति–धर्म / अमीर–गरीब, किसी भी प्रकार के कोई समूह नहीं, इंसान इंसान से दूर हो रहा है।

इंसानियत / भाईचारा जो समाज में लापता था, किसी के अच्छे/बुरे कार्यों में शामिल होना, समारोहों, शोक मामलों, संगोष्ठी, भ्रमण सभी ऐसे मामले जहां आम आदमी आपकी उपस्थिति सुनिश्चित करता था, वहां जाने के लिए शायद सोचने पर आमादा हो जायेगा। उल्लास, समारोह जो लोगों की रौनक के साथ किये जाते हैं, वो अब महज एक औपचारिकता के तौर पर होने लगे हैं। इंसान इस अकेलेपन की दुनिया में और अकेला होता जा रहा है। हाथ–मिलाकर, गले लगाकर, भाईचारा / प्यार जताना, अगर संस्कृति से ना जोड़ा जाए तो आने वाले सालों तक घृणित / अवांछनीय ही समझा जायेगा।

जिस तरह कोरोना संक्रमण पूरी दुनिया में फैल रहा है। एक मानसिक संक्रमण, मानवता के मगज में भी फैलता जा रहा है। भारत जैसे भरी आबादी वाले देश में जहां सोशल डिस्टैंसिंग का पालन आसान नहीं है। वहां कोरोना ने अपनी पहचान हमेशा के लिए छोड़ दी है, यह इतिहास में सदैव पढ़ा जायेगा।

सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टैंसिंग) निःसंदेह ही कोरोना के संक्रमण में कभी आ जायेगी। परन्तु कोरोना के बाद समाज में जो दूरियां बन जाएगी, वो शायद हमेशा के लिए बन जायेगी। बेहद मुश्किल होगा, इस अकेलेपन की दुनिया में बाकी जिन्दगी गुजारना। एक बार रिश्तों में दोस्तों में दूरियां बन जायें, वापस उन्हीं स्थिति में लाना मुश्किल है।

इस लेख के अंत में, मैं यही कामना करना चाहूंगा जब कोरोना का संक्रमण कम हो जाए तो लोगों को वापस अपनी नज़दीकियां बढ़ानी चाहिए एवं वापस पहले जैसा खुशनुमा वातावरण अपने चारों तरफ देखें ताकि चारों ओर फैले इस निराशा रूपी अंधकार व डर को बदला जा सके। Covid-19 से पनपी इस निराशा के वातावरण में हमें साथ चलकर इसका सामना करना चाहिए। सभी को यह समझना होगा कि लोगों व प्रकृति के बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं है, दोनों के साथ सामंजस्य बनाते हुए आगे बढ़ना है। जीवन जीने के लिये हमें अपनों का साथ चाहिये। यदि हम सब साथ हैं तो हमें मरने का डर नहीं होगा, जीने का सुकून होगा।

Individually, we are only drop.

Together, we are an ocean.

सभी स्वस्थ रहें, सावधान रहें, खुश रहें और एक रहें।

मानवीय दृष्टिकोण

-गणेश कुमार मीना

मानवीय दृष्टिकोण का शाब्दिक अर्थ है कि 'हम दूसरे लोगों को किस नज़र से देखते हैं इसके सामान्य आयाम हैं – सामाजिक दृष्टिकोण, आध्यात्मिक दृष्टिकोण, शैक्षिक दृष्टिकोण, राजनीतिक दृष्टिकोण, आर्थिक दृष्टिकोण, किसी अन्य क्षेत्र में योग्यता इत्यादि जैसे स्पोर्टस।

- सामाजिक दृष्टिकोण – बात करने का तरीका, सामान्य व्यवहार, रहन–सहन, पहनावा आदि।
- आध्यात्मिक दृष्टिकोण – आस्था, भक्ति, योग, किसी की ईश्वरीय शक्ति के प्रति सर्मपण
- राजनीतिक दृष्टिकोण – राजनैतिक क्षेत्र में विचार, राजनीतिक सोच का विकास, अधिकार प्राप्त करते हुए ज्ञान आदि।
- शैक्षिक दृष्टिकोण – शैक्षिक योग्यता
- व्यक्ति के चरित्र निर्माण में इन सभी आयामों का अनुपात समान होता है, सभी आयाम अपनी–अपनी जगह पर महत्वपूर्ण हैं कोई भी एक दूसरे से बड़ा या छोटा नहीं है क्योंकि ये अतुलनीय है।
- परन्तु जब हम अपने परिवेश को देखते हैं तब पाते है कि लोगों का पदसोपान (ऊँचा या नीचा बड़ा या छोटा) का क्रम केवल आर्थिक आधार पर तय किया जाता है अर्थात् हमारी सोच पर आर्थिक दृष्टिकोण ही हावी है।
- जिसके पास सम्पत्ति, दौलत ज्यादा है भले ही वह व्यवहारहीन, चरित्रहीन व अन्य आयामों में पिछड़ा ही क्यों न हो, हमारी नज़रों में वह बड़ा आदमी है। जिसके पास इनकी कमी है आर्थिक पक्ष कमज़ोर है और उसके व्यवहारशील गुणवान होने के बावजूद हमारी नज़रों में वह तुलनात्मक रूप से छोटा है।
- एक आध लोगों को तो मैंने यह कहते हुए भी सुना है कि पैसा भगवान तो नहीं परन्तु भगवान से कम भी नहीं। ऐसी सोच हमारी मानसिक स्थिति की लघुता या संकीर्णता का परिचय देती है।

गौर फरमायें इन बिन्दुओं पर :–

- जब भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को पता चला कि राष्ट्रपति बनने पर जीवनभर भरण–पोषण का खर्चा सरकार देती है तभी उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी।
- आज के दौर में मनुष्य और कुत्ते के चरित्र में अन्तर करने पर हम पाते हैं कि कुत्ता आज भी वफादार है और उतना ही खाता है जितनी उसे आवश्यकता हो जबकि आज के मनुष्य की वफादारी कुत्ते की तुलना में नगण्य हो गयी है वह अपनों का ही भरोसा तोड़ रहा है, अपनों को ही धोखा दे रहा है।
- ज्यादा गहराई से सोचने पर हम पाते हैं कि जो निःशुल्क है वही इस भूमि पर सबसे ज्यादा कीमती है।

नींद, हवा, पानी, प्रकाश हमारी सांसे और जिन्हें परम पिता परमात्मा ने हमें मुफ्त ही दे रखा है जरा सोचो इनमें से एक भी चीज हमारी जिन्दगी में कम हो जाए तो जीना मुश्किल हो जाए। परन्तु क्या करें हम केवल उन चीजों को महत्व देते है जो वास्तव में महत्वहीन हैं। हम मूर्खों ने हमारी तृष्णा, इच्छा और आकांक्षा की पूर्ति के लिए इन अनुपम ईश्वरीय उपहारों की गुणवत्ता में नकारात्मकता पैदा कर दी है। अतः उन चीजों को महत्व दें जो महत्व देने योग्य हैं। सभी से निवेदन है कि किसी भी व्यक्ति, वस्तु या अन्य किसी के प्रति अपना दृष्टिकोण रखने से पहले अपने दृष्टिकोण को बहुआयामी बनाएं।

ध्यान रहे इतिहास मुकेश अंबानी को कभी याद नहीं रखेगा पर डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को कभी नहीं भूलेगा।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

स्वतंत्रता दिवस के दौरान कार्यालय के कर्मचारी/अधिकारी राष्ट्रगान गाते हुए

स्वतंत्रता दिवस के दौरान श्री सुशील कुमार ठाकुर, महानिदेशक पौधारोपण करते हुए

कार्यालयीन गतिविधियाँ

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान श्रीमती अश्वती वी.एस., प्रवर उप महालेखाकार पुरस्कार प्रदान करते हुए

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान श्रीमती अश्वती वी.एस., प्रवर उप महालेखाकार पुरस्कार प्रदान करते हुए

कार्यालयीन गतिविधियाँ

कोविड-19 टेस्ट कैंप के दौरान उप महालेखाकार कोविड टेस्ट करवाते हुए

स्वतंत्रता दिवस के दौरान कार्यालय के कर्मचारीगण सामूहिक गान प्रस्तुत करते हुए।

कविता

ये दौर

-अंकित कुमार

वो दौर अलग था, अब वह मेरा रहनुमां नहीं लगता,
आँखों पर पड़ा पर्दा अब धीरे-धीरे उठने लगा है।

ऐसे ही नहीं दिल में सवालिया निशाँ उठते,
पहले जो मेरा था अब किसी और का होने लगा है।

वो जो सबके सामने खुशी का मुखौटा लगाये था,
अब एकांत ढूंढ़कर, खुद को कोसकर रोने लगा है।

घर में जिसे सबसे समझदार कहते थे,
ना जाने क्यों वो अब खुद को बेवजह खोने लगा है।

मन की शिथिलता से जूझकर और खुद से हार कर,
'मर्द कमजोर नहीं पड़ते' उसे ये ठप्पा गलत लगने लगा है।

था जो कभी हिमायती 'मोहब्बत' लफ्ज का,
'प्यार के किस्से होते नहीं मुक्कमल' ये कहने लगा है।

शरीक रहा जो कभी यार-ए-महफिलों में,
अब औरों से नहीं खुद से गुफ्तगू करने लगा है।

इस बेखुदी का आलम कुछ यूं दफ़न है उसमें,
कि रौनकों के शहर में हादसों से दोस्ती करने लगा है।

रहा जो उजड़ी बस्ती का हमसफ़र कभी,
अब हिम्मत से सब कुछ अकेला सहने लगा है।

अपनी इस दशा का इल्म तो है उसे, फिर भी
'या तो वो या कोई नहीं' इस बात पर अड़ने लगा है।

दुनियादारी

-एकता

थोड़ा वक्त देना चाहिए
ये दुनियादारी है क्या थोड़ा
समझ लेना चाहिए
एक का दो दो का चार
सभी का इसी में है संसार

ये अपना, वो पराया
इस मोह जाल से कोई नहीं निकल पाया।
कृष्ण दे गए गीता ज्ञान
ये जान कर भी है लोगों को अभिमान।
क्यों आए हो, क्या करना है

इस पर तुम कभी विचार करो
यूं बेकार की बातों में अपना
जीवन न बर्बाद करो।
तर्क के बादशाह हो तुम
बिना तर्क के किसी से बात करो
तर्क से जीवन नही चलता
कभी इस बात पर भी विचार करो।

रिश्ते नाते सब भूले हो
वक्त निकालो
उन रिश्तों को भी थोड़ा प्यार दो
प्रेम ही शाश्वत सत्य है
इस बात से न इनकार करो।

**''हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है,
जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की
अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है''**

- मैथिलीशरण गुप्त

नारी विमर्श की मैं हुँकार

-संतोष धीमान

स्वच्छंद उड़े तुम चहुँ दिशा
अलसाये साँझ सवेरों में,
वेगमान दरिया बन कर
बहते मदमस्त भरे बसेरों में
मैं कैद परिन्दा आँगन का
नित रही बंधनों फेरों में,
बस स्वयं से ही बतियाती थी,
रातों के गहन अंधेरों में।

तुम तपी रहे मैं तप बन कर
तेरे यज्ञ में स्वाहा होती
तुम नीति नियमों के रक्षक
मैं सदा रही इन को ढ़ोती।
अपने स्व को स्वाहा कर के
इस सृजन यज्ञ की अग्नि में
दंभी पौरूष से टकरा कर
मेरी अस्मिता रही रोती।

हूँ पूजनीय या वर्जनीय
यह निर्णय भला करेगा कौन
तेरी आन बान की वेदी पर
हर बार मिटी मैं रही मौन
इस दिल में करूणा प्रेम भाव
है अन्नतस अमृत की धारा
तुम निर्विकार, निष्ठुर, दम्भी
मेरे अवचेतन की कारा
तुम वंशवाद के प्रणेता
मैं शस्य श्यामला धरा सदा
तुम पुत्र मोह के व्यापारी
मेरा आंचल ममता भरा सदा

नारी प्रसूता होने पर
छाती में दूध उतरता है
पर नहीं आज तक सुना कभी
वह भेद शिशु में करता है

इन दंभी नीति नियमों को
मैं ठोकर से ठुकराती हूँ
मैं मातृ शक्ति हूं जगती की
जीवन को गले लगाती हूँ

है जननी का रूप मेरा
फिर क्यों न मैं विद्रोह करूँ
जो मांग रहा बलि बेटी की
उस बेटे से क्यों मोह करूँ

बेटी बेटे में भेद करूँ
यह दर्द सवेरे साँझ सहूँ
कन्या भ्रूण हत्या से बेहतर
मैं सदा सदा को बाँझ रहूं

नारी विमर्श की मैं हुँकार
मेरी मुक्ति का रथ है ये
मैं खींच पार ले जाऊँगी
इक नये सृजन का पथ है ये।

इलतिजा-ए-खूबसूरत

-सुनील कुमार गुप्ता

जब इबादत की घड़ी हो बंद हों आँखें मेरी
रूह पर मेरी उसी के अक्स के उभरे निशां
आसमां पे घिर के आयें जब घटाऐं खुशनुमा
गेसूओं को उसके ही सहलायें मेरी उंगलियां
वो मेरा मुरशिद मेरा रक्शेजिना और इफतिताह
उसकी पलकों के तले ही गुज़रे मेरी सुबहो शाम
उससे पहले जिन्दगी तक्सीर थी मैं तरदमां
बदहवासी में पड़ा था सूखे दरिया की तरह
वो नसीम एक सहर मेरी जिन्दगी में आयी जब
उसके आने से हुयी यह जिन्दगी आब-ए-रवां
उसकी आँखों की चमक में फलस्फा-ए-जिन्दगी
क्यों हुआ महसूस इसको कर नहीं सकता बयां
पलट जाये यह लहद या टूट जाये आसमां
बस रहे कायम भरोसा उसके मेरे दरमियां
ज़िन्दगी का क्या भरोसा आज है कल हो ना हो
शाख जो कल तक हरी थी आज सूखी पत्तियां
किस घड़ी वो आ के दस्तक दे मेरे दर पे अज़ल
घर में मैंने इसलिये रखा है थोड़ा ही सामान
जब मुझे महसूस हो कि जिन्दगी कुछ पल की है
उसके शाने पर झुका हो सिर मेरा जैसे कमान
इलतिज़ा-ए-खूबसूरत तुझ से परवर दिगर
अजल के आंचल में सोना तब मयस्सर हो मुझे
जब उसकी ही आगोश में हो सिर मेरा
और टिके हो दीद मेरे उसके ही रूखसार पर
वो मेरे सीने पे अपनी थपथपाये उंगलियां
नर्म पलकों से छुए पलकें मेरी
होंठ पर हों होंठ
तब निकलें यह प्राण

शब्दार्थः- इबादत-पूजा अर्चना, गेसू-बाल, मुरशिद-गुरू, रक्शेजिना-संरक्षक, इफतिताह - शान, तकसीर-जुर्म, तरदमां-जुर्मी, बदहवासी-बेहोशी, नसीम-ए-सहर-सुबह की शुद्ध हवा, आव-ए.हवाए आब-ए-खां - बहता पानी, फलसफा-ए-जिन्दगी-जीवन दर्शन, लहह-धरती, अजल-मृत्यु, शनि-कंधा, इलतिजा-इच्छा, परवरदिगर-परमात्मा, मयस्सर-उपलब्ध, दीद-आंखे, रूखसार-मुखड़ा/चेहरा

एक आस है तू

-मनीष कुमार

काली, भद्रकाली, दुर्गा, लक्ष्मी जिसका है यह इंसान पुजारी
फिर क्यों मरती है गर्भ में कन्या बेचारी,
लिट्टे, बोको हरम चाहे आज तालिबान भी दे पहरा
आज तेरे सम्मान में जरूर बोलेगा मनीष मेहरा।

कल कल कल करती किलकारी तेरी कलह बन गई,
जोत जलाती जल चढ़ाती चूल्हा जलाती तू खुद भी जल गई,
बोझ समझा गया तुम्हें,
मगर बोझ ढोया तुमने जिन्दगी सारी।
काली, भद्रकाली, दुर्गा, लक्ष्मी.....

प्यास है तू एक आस है तू
फिर भी कितनी उदास है तू
कहीं एक भी नहीं
कहीं एक साथ सात है तू
अरदास तेरे आगे तेरे खिलाफ
कैसा यह संसार और कैसा संसारी
काली, भद्रकाली, दुर्गा, लक्ष्मी.....

आज एक्टर से लेकर कंडक्टर तक
मंत्री से लेकर संतरी तक
हर जगह तेरे दस्तक तेरी दस्तक,
अगर तुझको क्रिकेट में भी मिल जाए मौका,
तू जरूर लगायेगी चौके पर चौका,
रह जाएंगे सब हक्के-बक्के,
जब लगेंगे तेरे छक्के
हवा में उड़ने वाली और तेरे ऊपर पहरेदारी
काली, भद्रकाली, दुर्गा, लक्ष्मी.....

एक आसमां है तो एक धरती भी है,
कोई कुछ करता है तो कोई कुछ करती भी है
दर्द है तो एक आह भी है,
पेड़ है कहीं तो एक छांह भी है
मेहरा नासमझी ना समझी तुम्हें,
मगर चले तुमसे दुनिया ये सारी
काली, भद्रकाली, दुर्गा, लक्ष्मी.....

पिता

-आशीष देवगण

'जिन्दगी धूप तो पिता छांव,
उनकी गोद, खुशियों भरा गाँव'
'जीवन समुद्र तो पिता किनारा,
हर तूफान में बस इनका ही सहारा'
'खाली थी जेब फिर भी सपने थे बड़े,
क्योंकि साथ में थे पिता खड़े'
'गरम रेत पर भी मैं चलने से ना घबराया,
क्योंकि जब भी पैर जले, पिता ने गोद में उठाया'
'मन्दिर और मस्जिद में भी मैंने वो सुकून न पाया,
जो पिता के साये में आया'
'जिन्दगी में हर बड़ी कामयाबी को छुआ,
क्योंकि मेरे साथ थी पिताजी की दुआ'
'बच्चे पेड़ तो पिताजी खाल,
जब कुल्हाड़ी चली, पहले पिता हुए हलाल'
'हर पिता को जादू आता है, क्योंकि,
जब खाना कम हो, खाना बच्चे खाते हैं,
और पेट पिताजी का भर जाता है'
'उम्र चालीस हो या पचास,
हम सदा रहते हैं बच्चे,
जो पिताजी की छांव में गुज़रे,
बस वही दिन थे सबसे अच्छे'

'मेरी हमेशा पूरी हुई हर फरियाद,
क्योंकि हमेशा साथ था
मेरे पिताजी का आशीर्वाद'
कलम उठायी और जादू किया,
जो मेरी किस्मत में नहीं लिखा था,
पिताजी ने वो भी लिख दिया...
पिता की दिलाई,
वो शर्ट, कई साल चल जाती,
और हर समारोह पर भाती,
अब हर महीने, नयी शर्ट लेते हैं,
पर वो बात नहीं आती .....
कितना अच्छा होता,
पापा सदा साथ रहते,
मैं कितना भी बूढ़ा हो जाता
वो मुझे 'बच्चा' ही कहते .....
लम्बे लम्बे रास्तों को हमने हंसी
में, मस्ती में मापा...
दूरी का पता ही नहीं चला,
क्योंकि साथ में थे पापा
खुदा गर कहे मैं उससे कोई एक चीज मांग लूं,
तो मैं सिर्फ खुदा से 'पापा' आपका साथ लूं...

पेंशन स्कंध

-चन्दन

डिजिटलाइजेशन की है तैयारी,
ई.पी.पी.ओ. की आयी है बारी,
साईं सिस्टम में बदलाव होगा,
फाइलों का काम ऑनलाइन होगा।

पी.ए.जी. सर का है यह विज़न,
पेंशनर्स को नहीं है टेंशन,
पी.एस.ए. भी खुश हो जाएंगे,
जब एक क्लिक में पेंशन फाइल पहुंचाएंगे।

डी.ए.जी. (प्र.) मैम हैं दूरदर्शी,
सबके मन में ऊर्जा भरती,
पेंशन फाइल ऑनलाइन निपटाएंगे,
सीधे ई.पी.पी.ओ. पहुंचाएंगे।

डी.ए.जी. (पेंशन) सर का क्या है कहना,
समूह पेंशन स्कंध मानता है कहना,
सर जैसा आदेश देते हैं,
सब वैसे ही फॉलो करते हैं।

नोयल सर हैं कर्ता-धर्ता,
साईं सिस्टम और पेंशन नियमों के ज्ञाता,
सभी जगह होती है यह चर्चा,
सबसे उनका गहरा रिश्ता।

पेंडेंसी अब नहीं रहेगी,
कोई कमी नहीं बचेगी,
हेड-क्वार्टर्स में नाम कमाएंगे
पूरा नंबर पाएंगे।

मेरी माँ

-गणेश

देवी माँ के चरणों में नमन करता हूँ।
आज मैं आपको मेरी माँ की कहानी सुनाता हूँ।।
जिला दौसा तहसील सिकराय में हिंगलाज माता का मंदिर होता था।
मंदिर के पीछे एक किसान अपने चार बच्चों के साथ रहता था।।
चारों बच्चों में मेरी माँ सबसे बड़ी हुआ करती थी।
सबको प्यार दुलार देकर बड़ी बहन का फर्ज निभाया करती थी।।
खेतों से था इतना प्यार की थकान तक को नहीं जानती थी।
नाना–नानी का हाथ बटाने के खातिर स्कूल भी नहीं जाती थी।।
छोटी उम्र में शादी हो गई पाँच साल बाद गौना।
ससुराल की हालत इतनी खस्ता थी कि बैठने को नहीं था बिछौना।।
थोड़ी सहमी, थोड़ी घबराई पर हिम्मत जो थी, नहीं हारी।
मेहनत पहले भी की थी, मेहनत अब भी करूंगी, तभी दूर होगी यह बीमारी।।
मंजिल व रास्तों से बेखबर वह दिन रात मेहनत करती थी।
कितनी ही बड़ी मुश्किल आ जाए वह डटकर मुकाबला करती थी।।
खेतों में काम करते समय कभी नहीं देखे वर्षा, गर्मी व जाड़े।
फिर भी तैयार फसल चौपट करने आ जाते थे बैरी ओड़े।।
जैसे–तैसे गुजर रही थी जिन्दगी आया फिर एक ऐसा मोड़।
हमउम्र भाई छिन गया, कुदरत का था ऐसा प्रकोप।।
टूट चुकी थी पूरी तरह पागलों जैसी हालत थी।
नहीं भूल पाती वीर को, दिन रात रोती रहती थी।।
गई चीज वापस नहीं आती, औरतें यह समझाती थी।
पर वह क्या नासमझ थी जो उसके समझ में नहीं आती थी।।
फिर हिम्मत बांध कर चलने लगी संभालने अपने घर परिवार को।
फिर पता चला बीमारियों ने जकड़ लिया है पूरे शरीर को।।
कुछ साल ही हुए थे भाई से बिछड़े, कि कुदरत ने एक और कहर ढाया।
बेचारी के सर से माँ–बाप का साया भी उजड़ गया।।
परन्तु इस बार देवी धीर, धैर्य, ढांढस, हिम्मत लेकर आई।
छोटे भाई–बहनों को ढांढस बंधाने के लिए अपने आंसू भी पी गई।
रोटी–कपड़ा और मकान से ज्यादा जीने के लिए जरूरत अपनों की होती है।
जिसने खोया हो कोई अपना वही जाने कि पीर अपनों की क्या होती है।
हर घरों के बर्तनों की तरह हमारे घर में भी बर्तन भिड़ते हैं
सभी बर्तनों की चमक बनाने को, वह राख का काम करती थी।
देखा नहीं दरवाजा स्कूल का, फिर भी किसी शिक्षक से कम नहीं
निपुण है हर नापतोल पैमाइश में, मेरी माँ किसी कलैक्टर से कम नहीं।।
आज हम जो भी हैं, जहां भी हैं इस देवी की देन है।
गर भटक भी जाएं कहीं तो वहीं सही रास्ते की लेन है।।
इस ममता की देवी के आँचल में स्नेह इतना भरा है।
अगर मिले जन्म दुबारा तो कोख तेरी ही स्वीकारा है।।
इस जननी के पैरों में ही स्वर्ग का वास होता है।
बदकिस्मती तो देखो मेरी कभी इनको छूने का एहसास भी नहीं मिल रहा है।।
ऐसे ही नहीं दिया गया है माँ को भगवान से भी ऊपर का दर्जा।
अगर प्राणों की बाजी लगाए तो भी नहीं उतरेगा इसका कर्जा।।

तुम्हारा बेटा गणेश

कहानी

जब कोई फौजण होती है।

-मंजीत कौर मीत

मेरी शादी के महीने बाद ही मेरे फौजी पति को विभाग की ओर से तार पहुंचा कि 'आप की छुट्टी रद्द की जाती है, जितनी जल्दी हो सके ड्यूटी पर हाजिर हों।' मेरे पति ने चुप-चाप ही मुझे बताये बिना ही अपना सामान सन्दूक में डालना शुरू कर दिया। मैंने बड़े हैरान होकर पूछा, 'सरकार ने कहां जाने की तैयारी शुरू कर दी।' मगर मेरी बात का उन्होंने कोई भी जवाब नहीं दिया और तार मेरे आगे कर दिया। तार पढ़ते ही मैं एक दम से सुन्न हो गई। अपने पति की उदासी तथा मजबूरी देख कर मेरी आंखों से आंसू टपक पड़े तथा मैंने अपने रंगीले चूड़े भरी बाजूएं उनके गले में डाल कर पूछा, 'सरदार जी, क्या जरूर ही जाना पड़ेगा?' मेरे पति ने अपने बाजुओं मे कसते हुए कहा, 'हां, सुरजीत जाना ही पड़ेगा और कोई रास्ता भी नहीं है, मैंने तो आप को पहले ही कहा था कि फौजी के साथ शादी करने से पहले सौ बार सोच लो, फौजियों के रास्ते तो सदा कंटीले होते हैं अर्थात मुसीबतों से भरे होते हैं। जब भी आदेश आएगा तो हमें न तो किसी नार के आंसू रोक सकते हैं और न ही उसकी दिलकश अदायें। किसी भी नार की जुल्फों के नाग कितने ही खतरनाक क्यों न हों, हमारे रास्तों में कुण्डली मार कर नहीं बैठ सकते।' मेरे खारे आंसुओं का चुम्बन भरते हुए मेरे पति ने कहा, 'चलो आओ मुझे खुशी-खुशी विदा करो तथा सच्ची फौजण का फर्ज़ अदा करो।' मैंने अपने बेहद प्यार का इजहार करते हुए कोरे कागज़ पर अपने सुर्ख-रंगे होंठों के चुंबन का निशान छाप कर उसकी जेब में डाल दिया तथा कहा कि, 'फौजिआ, जब भी आप थकावट के मारे लड़ाई के मैदान से दुश्मन को जीत कर आयें तो सोते वक्त इस कागज पर लगे निशानों की भाजी हमें वापस करते रहना। मुझे आप की मोहब्बत दूर बैठे भी पहुंचती रहेगी। अगर यह होंठों के निशान तुम्हें कमज़ोर करें तो बेशक इनके टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देना'। फिर मैंने सेजल आंखें के साथ उसे विदायगी दे दी।

कुछ दिनों बाद ही 1971 की बांग्लादेश की लड़ाई शुरू हो गई। प्रतिदिन रेडियो पर सैनिकों के शहीद होने की खबरें मिलने लगी। ऐसी खबरें सुन कर मेरा मन पसीज जाता तथा मेरा मन हर समय धक-धक करता। कुछ दिनों के बाद लड़ाई बंद हो चुकी थी। मैं प्रतिदिन अपने फौजी का इन्तजार करती पर एक दिन अचानक उसके घर से लापता होने का तार पहुंचा। तार मिलते ही मेरे ऊपर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा। खौफ़नाक जंग (लड़ाई) की बेदर्द आंधी ने मेरे इंतजार को मिट्टी में मिला दिया तथा मेरे अरमानों के घोसलें का तीला-तीला कर दिया। मैं सोचती, पता नहीं, भगवान ही जाने कि किस हाल में, और कहां मेरा फौजी भटक रहा होगा। क्या पता अब कब आये, क्या पता आये ही न .....। बेगाना देश, बेगाने लोग। उसको कब भेजेंगे अपने देश। यह सोच कर मैं अपने आपे से बाहर हो गई और कुएं की तरफ भागी, पर लोगों ने पकड़ लिया तथा संभाला (नी फौजणे, तेरी मत्त मारी गई - तू ऐसा क्यों कर रही है। तू एक फौजी की पत्नी है किसी आम आदमी की नहीं। तेरा पति लापता ही हुआ है कोई शहीद तो नहीं। तू फौजी की लाज है। भगवान करे, कल को तेरा फौजी लौट आया तो तुम्हारे इस शर्मनाक कार्य को सुन नहीं पायेगा, कि फौजणें तूने तो चार दिन भी मेरा इंतजार नहीं किया, मैं तो बरसात की तरह बरस रही गोलियों में भी तुम्हें न भूला पाया। अच्छी वफा निभाई, तुमने मेरे साथ तथा फौजी की औलाद (बच्चे) के बारे में सोच, जो तेरे गर्भ में पल रहा है।) लोगों की यह बातें सुन कर मैं घर लौट आई। फिर उसके लम्बे इंतजार में खो गई।

समय गुजरता गया। समय की सूई ने मेरे दिल के जख्मों को काफी हद तक सी दिया। मैं फौजी को भूल कर उसके बेटे की खुशियों के बारे में सोचने लग गई। लेकिन मेरे यह जख्म एक दिन फिर खुल गए, जब मेरी नजर एक अखबार पर पड़ी, जिसमें से मेरे सुर्ख होठों के निशान वाले कागज पर फोटो छपी हुई थी तथा साथ में वहीं मेरी शब्दावली लिखी हुई थी जो मैंने लड़ाई में जाते हुए मैंने अपने फौजी पति को लिख कर दिये थे। मेरे पूरे बदन में कंपन छिड़ गया। मुझे ऐसे महसूस हुआ जैसे मैं कोई सपना देख रही हूं। हम उस अखबार के एडीटर से मिले तथा उससे पूछा। तब उसने बताया कि पाकिस्तान जेल से किसी भारतीय सैनिक कैदी से यह टुकड़ा मिला था तथा उसने कहा था कि 'अगर हो सके तो हिन्दुस्तान में जाकर, वहां के पंजाबी अखबारों में यह पत्र जरूर छपवा देना।' 1971 की जंग के लापता हुए सैनिक जवान अभी तक पाकिस्तान जेलों में बंद नर्क की जिन्दगी व्यतीत कर रहे थे तथा आधे से ज्यादा तो अपने होश-हवाश में भी नहीं थे। किसी को भी कुछ याद नहीं तथा वह अपनी पिछली जिन्दगी को दुश्मन के तसीहों की वजह से भूल चुके थे। लेकिन मैंने तो फौजी के इस जन्म में मिलने की आशा ही छोड़ दी थी, पर वो पेपर पढ़ कर मेरी उम्मीद फिर से जाग गई। अब यह इंतजार मेरा अकेली का नहीं था, बल्कि फौजी के बेटे का भी था जो मेरे साथ बेसब्री से अपने पिता का इंतजार कर रहा था।

इस अचानक छपी खबर के बाद भी मुझे याद आया कि 'एक बार टी.वी. पर एक चैनल से खबर सुनी थी कि किसी पाकिस्तानी मेजर को भारतीय फौज ने बन्दी बना लिया' जब उसकी तलाशी ली गई तो उसकी जेब में से एक फटी-पुरानी चिट्ठी मिली जो उसकी पत्नी की थी। जिसमें उसने लिखा था कि 'मेजर साहब, आप को याद होगा कि आज हमारी मैरिज एनिवर्सिरी है। (शादी की सालगिराह) तथा मैंने शादी का सूट पहन कर पूरे हार-श्रृंगार के साथ पूरी रात अपनी सुहाग रात की यादों को आप के बिना आंसुओं के साथ काटा है। खुदा खैर करे, आप जंग जीत कर लौटो तथा अगले वर्ष यह दिन हम दोनों मिलकर मनायेंगे।

यह खबर पढ़ते ही मेरे मन में ख्याल आया कि फौजी चाहे, किसी भी देश या धर्म या किसी भी जगह का हो लेकिन उन सब के दुख-सुख एक जैसे ही होते हैं तथा फौजण (उनकी बीबी) किसी भी देश में रह रही हों, उन की भावनायें, अरमान, सपने तथा संताप भी सांझे ही होते हैं। यह खबर पढ़ कर मुझे ऐसे लगा कि 'पाकिस्तान की सरहद पर लगी कांटेदार तार को पार करने के लिये उस मेजर की पत्नी खूब चिल्ला रही है और हिन्दुस्तान आने की कोशिश कर रही है तथा मैं भी चीख-चीख कर इस कांटेदार तार को पार करके उधर जाने की कोशिश में हूं।' तभी एक-दम आसमानी बिजली कड़कती है। ऐसा महसूस हो रहा है कि जैसे दोनों मुल्कों की औरतों के सीने का दर्द बिजली बन कर आसमान को फाड़ देगा।

जानवर कौन?

-अम्बरीश शुक्ला

उसकी उम्र महज दस साल थी और अपनी गरीबी की वहज से उसे इस जगह पर पिछले पांच साल से लगातार काम करना पड़ रहा था। परन्तु आज काम में थोड़ी सी गड़बड़ी हो जाने की वजह से मालिक ने उसे अपने ढाबे से बाहर भूखा-प्यासा बैठा रखा था जिसपर वह होश संभालने से पहले से ही काम करता आया था। वैसे तो रात का बासी भोजन ही उसका आहार हुआ करता था परन्तु बुखार में तपते शरीर की वजह से आज उस से अन्य दिनों की भांति काम नहीं हो पा रहा था और मालिक की नाराजगी झेलनी पड़ी वो अलग। इसलिए आज उसे वो बासी भोजन भी अब तक मयस्सर नहीं हो पाया था।

भूखा प्यासा निढाल शरीर लिए वह बच्चा ढ़ाबे पर सभी को गाड़ियों से आते देखता और उनके द्वारा आर्डर किये गए भोजन को कातर निगाहों से देख कर मन की वेदना और भूख की बिलबिलाहट को छिपाते हुए यह सोच रहा था कि शायद किसी का मन पसीज जाये और किसी की कुछ कृपा हो जाये तो कुछ खाने को मिल जाये और उस बीमार शरीर में कुछ जान आ जाये। इतने में उसे अपना मालिक कुछ बासी रोटियों के साथ उसी की तरफ आता दिखाई दिया जिससे उसके अन्दर एक अलग तरह की ऊर्जा का संचार हुआ परन्तु यह खुशी तभी काफूर हो गयी जब मालिक ने वो रोटियां उसे न दे कर उसके बगल में कुछ दूरी पर बैठे कुत्ते को आवाज दी और राटियां कुत्ते की तरफ फैंक दी।

मुंह में रोटियां दबाये कुत्ता अब उसे ही देख रहा था और अब वह उसके नज़दीक आ रहा था। पहले से ही निर्जीव पड़े शरीर में अब इतनी भी जान न थी कि वो वहां से हिल भी पाता इसलिए खौफ से एकटक उसे पास आता देखता रहा। एकाएक डर भी गया परन्तु उसके अनुमानों के विपरीत कुत्ता उसके पास आकर आराम से बैठा, दुम हिलाई और रोटियों के कुछ टुकड़े उसके पास रख कर आगे बढ़ गया। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे उसने उसके मन के भावों को पढ़ लिया हो। भूख अब अपने उफान पर थी इसलिए बिना यह सोचे कि ये टुकड़े कौन दे गया, उसने उन्हें खाना शुरू कर दिया और अब उसके मन में सिर्फ एक ही भाव चल रहा था कि 'असली जानवर कौन है? ये कुत्ता या इंसान।।'

कार्यालय समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियां

- श्री रणदीप सिंह, वरिष्ठ लेखाकर, फुटबॉल खिलाड़ी ने दिनाक 15 नवम्बर से 23 नवम्बर 2020 तक और सौरव रूटेला, वरिष्ठ लेखाकर, फुटबॉल खिलाड़ी ने दिनांक 15 नवम्बर से 20 नवम्बर 2020 तक चण्ड़ीगढ में सी.ए.जी. की फुटबॉल टीम के सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैप में भाग लिया।

- श्री रणदीप सिंह और सौरव रूटेला, वरिष्ठ, फुटबॉल खिलाडियों ने दिनाक 13 अगस्त से 22 अगस्त 2021 तक चण्ड़ीगढ में सी.ए.जी. की फुटबॉल टीम के सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैप में भाग लिया।

- श्री सौरव रूटेला, फुटबॉल खिलाड़ी ने दिनांक 21 दिसम्बर से 26 दिसम्बर 2021 तक वाराणसी में सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा बलीया में All India Football Tournament 2021(Chief Minister's Cup) में भाग लिया।

- श्री रणदीप सिंह, फुटबॉल खिलाड़ी ने दिनांक 22 दिसम्बर से 26 दिसम्बर 2021 तक वाराणसी में सिलेक्शन ट्रायल कम कोचिंग कैंप तथा बलीया में All India Football Tournament 2021(Chief Minister's Cup) में भाग लिया।

- श्री विजय अहुजा, सहायक पर्यवेक्षक, वॉलीबाल खिलाड़ी ने दिनांक 5 मार्च से 11 मार्च 2021 तक भुवनेश्वर, ओडिसा में 69th Senior National Volleyball Championship for Men and Women में रैफरी के स्तर पर भाग लिया।

- श्री सुनील अहुजा, वरिष्ठ लेखाकार, टेबल टेनिस खिलाड़ी ने दिनांक 14 फरवरी से 11 फरवरी 2021 तक पंचकुला में 82nd Senior National Table Tennis Championship में भाग लिया।

- श्री गौरव देसवाल, लेखाकार, बैडमिंटन खिलाड़ी ने दिनांक 11 से 16 जनवरी 2022 तक लखनऊ में Yonex-Sunrise India Open 2022 तथा दिनांक 18 से 23 जनवरी 2022 तक दिल्ली में Delhi Syed Modi India International 2022 में प्रतियोगिता में भाग लिया।

- श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार, तथा श्री जसकरणदीप सिंह, लिपिक और श्री अर्पित सिंह, लिपिक, क्रिकेट खिलाड़ियों नें दिनांक 12.02.2021 से 02.03..2021 तक Vijay Hazare Trophy में तथा श्री आकाश वशिष्ठ, लिपिक, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 13.02.2021 से 014.03.2021 तक HPCA team in BCCI Vijay Hazare Trophy में भाग लिया।

- श्री आकाश वशिष्ठ, लिपिक, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 04.02.2021 से 12.2.2021 तक HPCA Senior Camp (BCCI Vijay Hazare) cum Ranji one Day Selection मैचों मे भाग लिया।
- श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार, और श्री जसकरणदीप सिंह, लिपिक क्रिकेट खिलाड़ियों नें दिनांक 01 से 31 जनवरी 2021 तक चण्डीगढ़ सीनियर क्रिकेट टीम में Syed Mushtaq Ali Trophy में तथा श्री आकाश वशिष्ठ, लिपिक, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 29 से 31 दिसम्बर 2020 तक ऊना HPCA Senior Camp में तथा दिनांक 01 जनवरी से 20 जनवरी 2021 तक RHPCA Ranji Team in Bcci Syed Mushtaq Ali Trophy में भाग लिया।
- श्री जसकरणदीप सिंह, श्री अर्पित सिंह और श्री अंकित कौशिक क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 21 से 31 दिसम्बर 2020 तक Vijay Hazare Trophy Chandigarh Senior cricket team's camp में भाग लिया।
- श्री आकाश वशिष्ठ, लिपिक, क्रिकेट खिलाड़ी ने दिनांक 16 से 28 दिसम्बर 2020 ऊना में HPCA Senior Camp में भाग लिया।
- श्री गुरदीप सिंह, हॉकी खिलाड़ी ने दिनांक 01 से 15 मार्च 2021 कैंप में तथा दिनांक 16 से 29 मार्च तक नरवाना, जींद, हरियाणा में 11वां Hockey India Sub Junior Men National Championship मे टीम मैनेजर के स्तर पर भाग लिया।
- श्री ध्यान सिंह, जगरूप सिंह, हरजीत सिंह और दिनेश मान, हॉकी खिलाड़ियों ने दिनांक 15 फरवरी से 05 मार्च 2021 तक चण्डीगढ में सी.ए.जी की हॉकी टीम के फिटनेस -कम- कंडीशनिंग कैंप में भाग लिया।

अधिकारियों/कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति

(01.04.2020 से 31.03.2021)

क्र.सं.	सेवानिवृत अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि	टिप्पणी
1.	सुनील कुमार कक्कड़, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.04.2020	——
2.	विजय सिंह राणा, वरिष्ठ लेखाकार	30.04.2020	——
3.	राम राज महतो, एम.टी.एस.	30.04.2020	——
4.	उर्मिला देवी शर्मा, वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020	——
5.	अजीत सिंह, वरिष्ठ लेखाकार	31.05.2020	——
6.	देश राज, वरिष्ठ लेखाकार	02.06.2020	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
7.	भुवन कोटियाल, पर्यवेक्षक	30.06.2020	——
8.	विजय कुमार, एम.टी.एस.	30.06.2020	——
9.	पूनम बैंस, वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2020	——
10.	नीलम लाम्बा, वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2020	——
11.	प्रवीण कुमार अग्निहोत्री, वरिष्ठ लेखाकार	31.07.2020	——
12.	नारायण दास, कैंटीन अटेंडेंट	31.07.2020	——
13.	करण सिंह रावत, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.08.2020	——
14.	संतोष कुमार, वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2020	——
15.	सुनील दत्त शर्मा, वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020	——
16.	उर्मिला रानी, वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020	——
17.	रविन्द्र सिंह रूपरा, वरिष्ठ लेखाकार	30.09.2020	——
18.	बलजीत कुमार, वरिष्ठ लेखाकार	31.10.2020	——
19.	बन्देश्वरी शर्मा, उप महालेखाकार	16.11.2020	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
20.	नरिन्द्र कौर, वरिष्ठ लेखाकार	31.12.2020	——
21.	वीना, वरिष्ठ लेखाकार	31.12.2020	——
22.	देविन्द्र मोहन कपूर, वरिष्ठ लेखाकार	05.01.2021	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
23.	त्रिलोचन सिंह, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.01.2021	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
24.	नोयल रिफत, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	28.02.2021	——
25.	राम फल नैन, सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2021	——
26.	केसर सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2021	——
27.	नच्छतर पाल, सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2021	——
28.	अखोरी परमानन्द सहाय, लेखाकार	28.02.2021	——
29.	सुनीता रानी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.03.2021	——

सभी सेवानिवृत्त अग्रज साथियों की दीर्घायु तथा उनके सुखी एवं स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए 'अंकुर' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

अधिकारियों/कर्मचारियों की नियुक्ति एवं पदोन्नति

(01.04.2020 से 31.03.2021)

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पद श्री/श्रीमती	पदोन्नति	तिथि	टिप्पणी
1.	वीरेन्द्र महिवाल, डी.ई.ओ. ग्रेड–ए	डी.ई.ओ. ग्रेड–बी	18.06.2020	––
2.	नीरज अरोड़ा, व. ले.	पर्यवेक्षक	01.07.2020	––
3.	विवेक कुमार, व. ले.	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
4.	विनोद कुमार, व. ले.	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	
5.	रफीक खान, डी.ई.ओ. ग्रेड–ए	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
6.	राहुल वर्मा, डी.ई.ओ. ग्रेड–ए	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
7.	सौरभ बंसल, व. ले.	स. ले. अ. (त)	20.10.2020	––
8.	विश्वदीप त्यागी, व. ले.	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
9.	स्पेन गर्ग, व. ले.	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
10.	मोहम्मद जावेद, व. ले.	स. ले. अ. (त)	20.10.2020	––
11.	तरुणा कनोजिया, व. ले.	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
12.	ज्योति रावत, व. ले.	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
13.	दुर्गेश वाध्वा, व. ले.	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
14.	गगनदीप सिंगला, व. ले.	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
15.	दीपक अत्तरी, व. ले.	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
16.	अमर सिंह मीना, डी.ई.ओ. ग्रेड–ए	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
17.	विवेक कुमार, डी.ई.ओ. ग्रेड–ए	स. ले. अ. (त)	19.10.2020	––
18.	दिगेंद्र राय मीना, लेखाकार	व. लेखाकार	01.01.2021	––
19.	चिराग मीना, लिपिक	लेखाकार	01.01.2021	––
20.	अशोक कुमार, लिपिक	लेखाकार	01.01.2021	––
21.	शम्भू कुमार, लिपिक	लेखाकार	01.01.2021	––
22.	सुमन नैन, लिपिक	लेखाकार	01.01.2021	––
23.	करण, लिपिक	लेखाकार	01.01.2021	––
24.	राजेश कुमार नेगी, एम.टी.एस.	लिपिक	01.01.2021	––
25.	सोहन सिंह, एम.टी.एस.	लिपिक	01.01.2021	––
26.	राजीव कुमार बंसल, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
27.	बलविंदरजीत कौर, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
28.	नीना मुंजाल, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
29.	चन्द्र प्रभा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
30.	किरण बाला शर्मा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
31.	परवीन भूटानी, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
32.	वरिंदर कुमार, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
33.	रणजीत सिंह नेगी, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
34.	मंजू शर्मा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––

35.	वीणा रानी, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
36.	जवाहर लाल शर्मा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
37.	खुशी राम सिरोया, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
38.	इंदु कोछर, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
39.	पुष्पा देवी, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
40.	कुलदीप सिंह, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
41.	संगीता डांग, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
42.	अशोक कुमार गुप्ता	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
43.	करणोंउधरा नन्द, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
44.	सुरजीत सिंह–7, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
45.	अमन कुमार, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
46.	तारा रानी, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
47.	रंजू महाजन, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
48.	विजय सिंह भनोट, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
49.	केसर सिंह भनोट, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
50.	केसर सिंह, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
51.	मोहन सिंह, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
52.	रविन्दर कुमार–2, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
53.	करनैल सिंह–1, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
54.	अनिल कुमार महाजन, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
55.	लक्ष्मी साहा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
56.	ऋतू शर्मा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
57.	नछतर पाल, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
58.	राम लाल–2, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
59.	शंकर भारती, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
60.	दौलत राम सैनी, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
61.	सरिता कालरा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
62.	राजीव मेहता, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
63.	अंजू शर्मा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
64.	नरेश भट्टी, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
65.	विनीत सेठ, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
66.	परवीन महाजन, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
67.	नरिन्दर सिंह, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
68.	तिलक राज–2, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
69.	हरी दास, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
70.	नरिंदर पुरी, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
71.	हेमंत कुमार, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
72.	राकेश कुमार–2, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––

73.	सुरेश कुमार–1, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
74.	इंदु मल्होत्रा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
75.	सुखबीर सिंह गिल, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
76.	राजीव कुमार गौर, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
77.	सुनील कुमार गुप्ता, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
78.	अनीता घई, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
79.	अशोक कुमार शर्मा, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
80.	हरिंदर कुमार, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
81.	अश्वनी कुमार अगरवाल, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
82.	राजेश बहल, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
83.	आशीष देवगन, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
84.	संगीता कंधारी, व ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
85.	राकेश कुमार–1, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
86.	राजिन्दर सिंह–2, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
87.	बलबीर चाँद–1, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
88.	सतनाम सिंह, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
89.	जगदीश चंदर, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
90.	सुखविंदर सिंह, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
91.	योगेश कुमार, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
92.	राज कुमार–4, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
93.	नीरा गोयल, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
94.	कीमती लाल, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.01.2021	––
95.	राज कुमार–5, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.03.2021	––
96.	सीमा खुराना, व. ले.	स. पर्यवेक्षक	01.03.2021	––
97.	प्रमोद कुमार, स. ले. अ.	व. ले. अ.	25.02.2021	––
98.	वीरेंदर शर्मा, स. ले. अ.	व. ले. अ.	25.02.2021	––
99.	रविंदर सिंह–2, स. ले. अ.	व. ले. अ.	25.02.2021	––
100.	रवि कुमार सोबती, स. ले. अ.	व. ले. अ.	25.02.2021	––
101.	संजीव ठाकुर, स. ले. अ.	व. ले. अ.	25.02.2021	––
102.	सुनीता रानी, स. ले. अ.	व. ले. अ.	25.02.2021	––

- **अलविदा**

  श्रीमती सुषमा भनोट, वरिष्ठ लेखाकार दिनांक 07.12.2020 को अपनी जीवन-यात्रा पूरी करके अखण्ड ज्योति में समा गई। 'अंकुर' परिवार की ओर से दिवगंत आत्मा के प्रति भाव-भीनी श्रद्धांजलि।

ध्वजारोहण

रॉक गार्डन, चण्डीगढ़

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017